श्री जैन भजन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रकाशक—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ-ग्रन्थागार

"णाणं पयासयं"

कृपया—

(१) मैले हाथोंसे पुस्तकको स्पर्श न कीजिये। जिल्दपर काग़ज़ चढ़ा कीजिये।

(२) पन्ने सम्हाल कर उलटिये। थूकका प्रयोग न कीजिये।

(३) निशानीके लिये पन्ने न मोड़िये, न कोई मोटी चीज़ रखिये। काग़ज़का टुकड़ा काफ़ी है।

(४) हाशियोंपर निशान न बनाइये, न कुछ लिखिये।

(५) खुली पुस्तक उलटकर न रखिये, न दोहरी करके पढ़िये।

(६) पुस्तकको समयपर अवश्य लौटा दीजिये।

"पुस्तकें विद्यादेवता हैं, इनकी विनय कीजिये"

ओंनमः सिद्धेभ्यः ॥

नय... दास रचित—

॥ जैन भजन संग्रह ॥

मं..लाचरण ।

—ज्ञानानंद अनंत शिव, अर्हन मंगल मूल ।
...लिल कुलाचल तोड़कर, हरोनाथ भवसूल ॥
...म शिव मगनेतार हो, भेत्ता कर्म पहार ।
...श्व तत्व ज्ञाता परम, लो सुधि बेग हमार ॥
तुम त्रिभुवन के भानु हो, मैं खद्योत समान ।
कैसे तुम गुण वर्णऊं, अल्प मतिन की बान ॥
हृदय भक्ति प्रेरक भई, बलकर पकरे कान ।
...पटक्यो पदकमल बिच, सकल जगत गुणखान ॥
तुम अनंत गुण आगरे, पटतर अवरन कोय ।
तुम वाणी तें जानिये, जो कछु जग में होय ॥
भूत भविष्यत कालकी, षट द्रव्यन पर जाय ।
वर्तमान सम तुम लखो, हस्तामलक सुभाय ॥
... चराचर जगतथित, ज्ञान मुकरमें ... ।
... ॥

तुमतैं गणधरनै सुन्यो, चहुँ गति मय सार।
तातैं तुम हो परम गुरु, पतित उधारन हार॥
वीतराग सर्वज्ञ तुम, तारण तरण महान।
तातें तुमरे वचन प्रभु, हैं षट् मत परवान॥

धरम अहिंसा तुम कह्यो, जहँ हिंसा तहँ पाप।
दयावंत भवजल तिरैं, पापी जग संताप॥
जीव दया गुण बेलड़ी, बोई ऋषभ जिनेश।
षटदर्शन मंडप चढ़ी, सींची भरत नृपेश॥

मिथ्या वचन अनादरे, तुमने हे जग सेत।
तातैं झूठन की झरत, जहां तहां सिर रेत॥
सत्य धर्म तैं होत है, त्रिभुवन में परतीत।
सततैं गोला लोहका, होय तुषार प्रतीत॥

चोरी तुम वर्जनकरी, परम पाप लख घोर।
त्यागी पद पद पूजिये, चोर सहैं बहुपीर॥

अनाचार वर्जन कियो, ग्रहणकरणकह्योशील।
जिन धारो सो जग तरे, जिन छाड़ो कढीकील॥

शील सिरोमणिजगतमें, यासम धर्म न और।
अग्निहोय जल परणवै, विष हो अमृत कोर॥
खड्गमालह्वै परण वै, सूल सेज मखतूल।
आधिव्याधि आवै नहीं, शीलबंत ढिगमूल॥

भव तृष्णा दुख दायनी, भाषी तुम भगवान।
त्यागी त्रिभवनपतिभये, रागी नर्क निदान॥
देवधर्म गुरु हो तुम्ही, ज्ञान ज्ञेय ज्ञातार।
ध्यान ध्येय ध्याता तुम्ही, हेया हेय विचार॥

कारण हो शिव पंथ के, उद्धारण जग कूप ।
कारज सारन जीव के, हो तुमही शिव भूप ॥
उत्तम जन बहु जगतसैं, तारे तुम भगवान ।
अधम न तारो एक मैं, तारो हे जग जान ॥

आयो तुम पद पूजने, भजन करन के चाव ।
राखो भव २ भजन में, जब लग जग भरमाव ॥
भजन करत संसारसुख, भजन करतनिर्वान ।
भजन बिना नर जगतमें, है तिर्जंच समान ॥

भजन करत जग उद्धरे, सिंह नवल कपि सूर ।
गण धरहो बृष भेश के, मुक्ति भये अघचूर ॥
निर अंजन अंजन भये, गज किरातभये सिद्ध ।
स्वान जटी पन्नगतिरे, तिनकी कथा प्रसिद्ध ॥

कहां पशूपर जायनर, कहां मुक्ति को धाम ।
तू भी मूरख भजनकर, मुख में भलो न चाम ॥
या जग विषम विदेशमें, बंधु भजन भगवान ।
सार्थ वाह निर्वृत्तिको, लखि निश्चयउरआन ॥

भजनबाद जिनभक्ति बिन, भक्तिबाद बिनभाव ।
भाव बाद अवगाढ़ बिन, गाढ बाद बिन चाव ॥
धन्य महूरत धन घड़ी, धन्य दिवस गिनआज ।
तरस तरस कारण जुड़ो, श्रीजिनभजनसमाज ॥

रहो सदा सैली सुखी, रहो सदा सत् संग ।
जातैं श्रीजिन भजन में, प्रति दिन होय उमंग ॥
धन्य पुरुष सज्जन मिले, भये सहायक धर्म ।
भजन करूं भगवंत का, राख सरस्वति शर्म ॥

तू कैवल्य उद्योत की, परम ज्योति तमहार।
नयनानंद गरीब की, यह बिनती उरधार॥

मोह महातम दूर कर, शुद्ध ज्ञान परकाश।
ज्यों अब सांचे देव का, गाऊं भजन बिलास॥
यह बिधि मंगल मानकै, कहूँ भजन दो चार।
भाषूं नयना नंद के, कृत बिलास अनुसार॥

धुरपद।

१—चाल धुरपद (२४ तीर्थंकर के नाम)

ऋषभोजित संभवेंद, अभिनंदन सुमतिकंद पद्मप्रभपादबंद, भगवत गुणगावरे॥ टेक॥ सेवो शुभपास संत, चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस कंत, सोधैमन ध्यावरे ॥१॥ वासवनुत वासपूज, भजिकर निर्मूल अरूज भागै अघ अनन्त धूज, सद्धर्म प्रभावरे ॥२॥ धरले मनशांति कुंथु, परले अरमल्लिपंथ वरले सुव्रत समंत नमि नेमीश पावरे ॥३॥ करले पारससैं भेट सन्मति गहि भर्म मेट बीत्यो चिरकाल क्यौं न, उरझा सुरझावरे ॥४॥

२—चालधुरपद (तीर्थंकरों के पिता के नाम)

वंदूं जगनाथ तात, नाभिरु जितशत्रुनाथ। धार कै जुग हाथ माथ, धन धन बलधारी॥ टेक॥ जयतार सुवीरमेघ, धारण सुप्रतिष्ठ नेघ। महसेन सुकंठ वेग दृढरथ सुखकारी॥१॥ बिमलेश्वर वासुदेव, जयबृष सिंघसेन एव। भावन विसुसेन सेव, सूरज दुखहारी॥२॥ सुन्दर दर्शन नरेश, कुंभरु श्रीसमंतेश। विजयो-

जय जलनिधेश, पुन्यातम भारी ॥३॥ भजरेमन अश्वसेन, सिद्धा-रथ सिद्धदेन। ये जिन चौबीस तात, एका भवतारी ॥४॥

३—चालधुरपद (तीर्थंकरों की माता के नाम)

सुनरेमन मेरी बात, जापजिन जगत तात। ऐसी जिन मात ताहि, बंदन नित करनी ॥ टेक ॥ मरुदे विजया मतीय, श्रीयुत-षेणा सतीय। सिधअर्था मंगलीय सीमा सुखभरणी ॥१॥ पृथवी शुभलक्षणीय, रामारु सुनंदनीय। बिमला जयदेबि रमा, सूर्या दुखहरणी ॥२॥ सुभव्रतधरणी सतीय, एला अरुश्रीमतीय। मित्रा सारस्वतीय, श्यामा भवतरणी ॥३॥ विशिषा शिव देवि माय, वामा त्रिशलादि ध्याय। बंदूं वह कोष जगत, चूड़ामणि धरणी ॥४॥

४—चालधुरपद (तीर्थंकरों के सोलह जन्म नगर)

कौशल सावत्थि धाम, काशी कोशं विठाम। तीर्थंकर जन्म ग्राम, तीरथ कर प्यारे ॥ टेक ॥ चंपापुर चंद्रपुर भद्दलपुर, सिंहपुर। मिथुलापुर रत्नपुर गजपुर नितजारे ॥१॥ काकंदी कंपिलादि, सूरजपुर राखयाद। जाकरकुषअग्रपूर मुनिसव्रतध्यारे ॥२॥ कुंडलपुर बीरदेव, षोडश हैं नगर एव। जन्मे भगवंत जहां आप सुरसारे ॥३॥ घर घर भई रत्न वृष्टि, धर्मातम भई सृष्टि शोभा बरनी न जाय, नरभव फलपारे ॥४॥

५—चालधुरपद (तीर्थंकरों के चरण चिह्न)

भाषूं जिन चरण चिह्न, प्रभु के तनतैं अभिन्न। सुनकै चित हो प्रसन्न, संशय सब टारिये ॥ टेक ॥ वृष गज घोटक कपीश,

क्रौंचरु अंभोजदोश। स्वस्तिक निशाँश मच्छ, श्रीवत्स विचारिये ॥१॥ षंगपग महिषा बराह, बाजरु बज्रायुधाह। मृग बोक धनुर्गिनाह, कलशा उरधारिये ॥२॥ कच्छप अरुकमलशंष, सर्परु केहरिनिशंक। लखिकै जिन अंक नाम, निश्चय चित पाड़िये ॥३॥ धरिये उर ध्यान देव, करिये प्रभु चरण सेव। जातैं भव सिंधु खेव, शिवमें ले तारिये ॥४॥

६—चालधुरपद (गुरु नमस्कार)

बंदू निर्ग्रंथसाधु, त्यागी जिनगज उपाधि। आतम अनुभव अराधि, परपरणतिछारी ॥ टेक ॥ तजि तजि षट्चक्रवर्ति, मन बचत न हो निवर्त। पायन पृथिवी विचर्त, जिन दिक्षा धारी ॥१॥ सम दम संवरसंभार, निर्जर कर कर्मटार। षट तन प्राणी उबार, करुणा बिस्तारी ॥ जीते त्रय शल्यदल्ल, सुर गि रसम भये अचल्ल। रत्नत्रय धरणमल्ल, कष्ट सहैं भारी ॥३॥ जय जय महमा निधान, जंगम तीरथ समान। मेरे उर बसो आन, बंदूं जगता-री ॥४॥

७—चालधुरपद [जिन बाणी नमस्कार]

निकसी गिरबर्द्धमान, सेती गंगा समान। गोतम मुखपरी आन, सारद जगमाता ॥ टेक ॥ तारेत भ्रमगज सुदंत, जड़ता तपकरि प्रशांत। रत्नाकर ज्ञान अंत, पहुँचो भवत्राता ॥१॥ जामैं सप्तांगभंग, उट्ठैं निर्मल तरंग। अमृत को कोर मोख, मारग की दाता ॥२॥ आदिरु मध्यावसान, निर्मल किरपा निधान। धारा पर घाह बान, त्रिभवन बिख्याता ॥३॥ बंदै हग सुक्खदास, मेरे उर कर निवास। गाऊं जिनगुण बिलास, कीजै सुख साता ॥४॥

८—चाल धुरपद [रत्नत्रय धर्म को नमस्कार]

लागरे तू मोक्ष मग्ग, रत्नत्रय मांहि पग्ग। मोरै मतनाहि डग्ग, पहुँचै शिव धामरे ॥ टेक ॥ सम्यक् मई दृष्ठिठान, हित अरु अनहित पिछान। संशय भ्रमभान ज्ञान, चिंतामणि थामरे ॥१॥ पूंजी परभवकी जान, सम्यक् चारित्र आन। टूटैं अघजाल मुक्ति, पावै बिन दामरे ॥ २ ॥ तन धन आशा बिहाय, कृषकर काया कषाय। कोई न करि हैं सहाय, जबह्लै अघलामरे ॥३॥ नैनानंद कहत मीत, भाषी सतगुरुनै नीत। बोवै बबूल तौ न, लागैंगे आमरे ॥४॥

९—चालधुरपद [१६ कारण भावना]

भारे दर्शन बिशुद्ध, तजकर परणति विरुद्ध। प्रवचन वत्सलसुबुद्ध, आदिक बल फुरकै ॥ टेक ॥ तीर्थंकर प्रकृतसार, ताकी यह देनहार। आराधन गुन संभार, अपनी उर दुरकै ॥१॥ जिन पद अरिविंदसेय, सतगुरकी सरण लेय ॥ आगम मैं चित्त देय, टूटै अघचुरिकै ॥२॥ आगे कुछ सिद्ध नाहिं दोनों भव बिगड़ जाय भरमैं गो फेर २ रो रो झुर झुर कै ॥३॥ भरमों चहुँगति मंझार, नैनानंद सुनले यार। कुविसन की देवटार, भागै मति दुरिकै ॥४॥

१०—चाल धुरपद (पंचपरमेष्टि नमस्कार)

चेतरे अचेत मीत लीनों चिरकाल बीत तजकै परमाद रीति अबतो तू जागरे ॥ टेक ॥ भजले पर ब्रह्मरूप अर्हन सर्वज्ञभूप सिद्धन के गुण अनूप चितवन में लागरे ॥ १ ॥ आचारज अरु-

उवज्झाय, साकुन पदसीसनाय, पैंडोक्षुड्वाय, दुष्ट विषयन सूं भागरे ॥ २ ॥ हिंसा अरु झूठ नाख मत कर चोरी भिलाख मैथुन सिर डार खाक तृष्णा जग त्यागरे ॥ ३ ॥ पांचों पद ध्याय पंच पापतैं पलाय अब पूरी कर नींद नाहीं खावैंगे कागरे ॥ ४ ॥

११–चाल धुरपद (संसार व्यवस्था)

देखरे अज्ञान भौन तेरो जगमांहि कौन कीने सब स्वांग तीन तो मन अपकायो ॥ टेक ॥ लेयकै निगोदकाय पृथिवी अप तेजवाय तरवर चरथिर भ्रमाय चहुँगति भरिआओ ॥ १ ॥ सुरनर पशुनर्कथान कबहुक विचरयो विमान कबहुक नरपति प्रधान लटक्रम कहलायो ॥ २ ॥ कबहुक बन्धखम्भलाल तन की उचराय खाल कबहुक चण्डाल अभक्ष भक्षण को धायो ॥ ३ ॥ अबतोनर चेत चेत विषयन सिर डार रेत पौरुष परकाश तू है सिंहनि को जायो ॥ ४ ॥

१२–चाल धुरपद (सम्यक्त महिमा)

बंदूं समकित निधान जिन पति के नन्दजान नन्दनबनकी समान सबकूं सुखकारी ॥ टेक ॥ जिनके घट माहिराज उमड्यो घनज्ञान गाज समरस भई वृष्टि सृष्टि तृष्णा सब टारी ॥ १ ॥ अनभव अंकूर फूट शंसय गुठली प्रटूट चारितरुचि ब्रह्मभाव शाखा विस्तारी ॥ २ ॥ सुव्रत पुष्पोन्मीत करकै जिन बच प्रतीत शिवफल में धारमीत परपरणति छारी ॥ ३ ॥ करुणा छाया पसार भोगी जोगी अपार ठाडे भव बन मझार निर्भय अविकारी ॥ ४ ॥

१३—चाल धुरपद ।

बंकोन मझोल गोल, कर्मन केहैं झकोल । मेरी महिमा अडोल चेतन अविनाशी ॥ टेक ॥ लघुगुरु मम रूप नांहिं मृदु कठिन सरूप नांहिं हिम उष्णप्ररूप नाहिं रूखन चिकनासी ॥ १ ॥ षट्रस अनमिष्ट खार चर्चरव कषाय सार कटुकन दुर्गन्ध गन्ध श्याम न पीतासी ॥ २ ॥ हरि तन आरक्त श्वेत धूपन तम ज्योति देत शब्दन सुरनर परेत नर्क न बन बासी ॥ ३ ॥ जल थल बिलनभ चरीन त्रिय पुन्स न पुन्स कीन धनवन्त न रङ्क हीन सम्यक् करिभासी ॥ ४ ॥

१४—चाल धुरपद ।

धर्मी न अधर्म पाल अनमें आकाश काल पुग्दल सैं भिन्न एक चेतन चित्सारी ॥ १ ॥ परजयगति थिति धरंत त्रिभुवन नभ में भ्रमंत त्रिपणी मोहि सब कहंत त्रयधा तपधारी ॥ २ ॥ भूजल अनतेजवाय दोबिधि तर वर न काय बिकलत्रय रूप नाहिं इंद्रिय सब न्यारी ॥ ३ ॥ सब से अनमेल खेल जैसे तिल मांहिं तेल पावक पाषाण जेम हमरी विधिसारी । ऐसे विज्ञान भानु दृगसुख महिमा निधान तिनकूं जुग जोरि पान बंदन बिस्तारी ॥ ५ ॥

१५—शूलताल ।

आतम दरवको भेद न पायो, परपरणतिकर, यह नर जन्म गंवायो ॥ टेक ॥ भरम भगल वस, पंच दरव फंसि, नटवत नवरस, कर्म नचायो ॥ १ ॥ सपरस रस अरु गंध वरण स्वर,

इनते पर निज, क्यों न लखायो ॥ २ ॥ बन्दा अगिनि ज्यों, दधि में घृत त्यों, किम तिल तेल, जतन बिन पायो ॥ ३ ॥ तजि परपञ्चन, माटी कञ्चन, ढूंढि निरंजन, सतगुरु गायो ॥ ४ ॥ दृगसुखसिंधन, दाहनिकंदन, शूलताल करि ज्ञान सुनायो ॥ ५ ॥

१६—रागधनाश्री ताल तैलंगी।

अरे नर तनको मोह न कर रे, तू चेतन यह जर रे ॥ टेक ॥
सपरस पोषि विषय कूं चाहै सो मोरी रही सर रे ॥ १ ॥
रसना क्या न भखो या जग में सब पुद्गल लियेचर रे ॥ २ ॥
नांक फांक मत फूल घुसे रे रही सिनक सूं भर रे ॥ ३ ॥
जिन आंखन पर गोरीनिरखै सो ढोढों रही झर रे ॥ ४ ॥
धर्म कथा सुन मोक्ष न चाहे तो यह कान कतर रे ॥ ५ ॥
तू निरअञ्जन है भयभञ्जन तन कठिन को घर रे ॥ ६ ॥
दधिवत् मथि षट मास निरालो भाषत हैं सत गुरु रे ॥ ७ ॥
दृगसुख होय निजातम दर्शन भवसागर सूं तर रे ॥ ८ ॥

१७—राग दादरा।

करै जीव का कल्याण, सदा जैन बानी रे, जैनबानी जैनबानी जैन बानी रे, करै जीव का कल्याण ॥ टेक ॥ संशयादि दोषहरै, मोहकूं निमूंल करै, तोषदाय नन्दन, बन समानी रे ॥ १ ॥ कर्मजाल भेदनी, है भर्म की उच्छेदनी, वस्तु के स्वरूप की है लाभ दानी रे ॥ २ ॥ वस्तु कूं विचार जीव, पार होत हैं सदीव, केवलादि ज्ञान की, कलानिधानी रे ॥ ३ ॥ नैन सुक्ख अन्तकाल, में करै सबै निहाल, नाग बाघ स्वान किये स्वर्ग थानी रे ॥ ४ ॥

चौबीस तीर्थंकरों के भजन

१८—राग कालङ्गड़ा (श्री ऋषभजनाथ)

अबतो सखी दिन नीके आये, आदीश्वर लीनो अवतार ॥टेक॥

सरवारथ सिद्धितें चय आये, मरुदेवी माता उरधार ।
नाभि नृपति घर बटत बधाई, आज अयोध्यानगर मझार ॥ १ ॥
सुखम दुखम में तीन वरष, अरु शेष रहे वसुमास अवार ।
अबतो जाग जाग मोरी आली, हिल मिल गावें मंगलचार ॥ २ ॥
पुण्य उदयते नर भवपायो, अरु पायो उत्तम कुलसार ।
धर्म तीर्थ करता गुरु पायो, अब कटि हैं सब कर्म विकार ॥ ३ ॥
स्वयंबुद्ध पूरण परमेश्वर, मोक्ष पंथ दर्सावन हार ।
नयनसुख्य मन वचन कायकरि, नमूं नमूंवसु अङ्ग पसार ॥ ४ ॥

१६—रागनी भैरवीं (श्रीअजितनाथ)

अजित कथा सुनि हर्ष भयोरी ॥ टेक ॥

विजयविमान त्याग के प्रभुजी, जेठ अमावस आनिचयोरी ।
माघ सुदी दशमी नवमी कूं. जनम तथा जग त्याग कियोरी ॥१॥
जित रिपु तात मात बिजयादे, नगर अयोध्या दरस दियोरी ।
जाके चरण चिह्न गजपति को, ढोंच शतक तन तुङ्ग थयोरी ॥२॥
लाख बहत्तर पूरवआयू , इन्द्र ने पांच उछाव कियोरी ।
पोष शुक्ल एकादशि अवसर, सकल चराचर बोध भयोरी ॥ ३ ॥
मधुसित पांचें कूं शिवपाई, भवि अनन्त उद्धार कियोरी ।
दृगसुख तीन काल तिहुँजग में, सो जिनवर जैवन्त जयोरी ॥ ४ ॥

२०—राग बिलावल (श्रीसंभवनाथ)

संभवनाथ हरो मम आरत, आ पकड़े प्रभु चरण तुम्हारे ॥ टेक ॥
तुम बिन कौन हरै मम पातक, तुम बिन कौन सहाय हमारे ।
धनुषच्यार शत मूरति तुमरी, निरखत उपजत हरष अपारे ॥
सुनियत जन्मपुरी सावस्ती, सुनयत घोटक चिह्न तुम्हारे ।
पिता जितारथ सेना माता, साठलाख पूरब थिति धारे ॥ २ ॥
ऊरध ग्रीवकतैं चय आये, तुम जग जाल बिदारन हारे ।
दृगसुख देखि दिगम्बर तुमको, और लगैं सब देव ठगारे ॥ ३ ॥

२१—रागनी टोड़ी (श्रीअभिनन्दननाथ)

जै जै जै संवर नृपनन्दन अभिनन्दन नृप जगत अधार ॥ टेक ॥
विजै बिमान त्यागि तुम आये, सिधअर्था के गर्भ मझार ।
जन्मे माघ सुदी द्वादशि को, नगर अयोध्या सुखदातार ॥ १ ॥
जिस दिन जन्म उसी दिन दिक्षा, ज्ञान पौषबदि चौथ अपार ।
भये सिद्ध वैशाख सुदी छठ, पूरब लाख पचास उमार ॥ २ ॥
धनुष तीनसै साढे काया, स्वर्ण वर्ण कपि चिह्न तुम्हारे ।
तुम इक्ष्वाकुवंशके भूषण, सुरनर गावत सुजस अपार ॥ ३ ॥
नैनानन्द भयो अब मेरे, देख दिगम्बर मुद्रासार ।
सुन सुन बचन विगतमल तुमरे, दीने कुगुरु कुदेव विसार ॥ ४ ॥

२२—रागनी जोगिया असावरी [श्रीसुमतिनाथ]

तुम कुमति बिनाशन हारे, सुमति जिन कुमति विनाशन हारे॥टेक॥
तात सुमेघ मंगला माता, खग पग क्रौंच तुम्हारे ।
लीनो जन्म अयोध्या नगरी, वन्श इक्ष्वाकु मझारे ॥ १ ॥

धनुष तीनसै तुङ्ग प्रभु तुम, सब भव भोग बिसारे ।
कर्मघातिया तोड़ छिनक में, लोकालोक निहारे ॥ २ ॥
विश्वतत्त्व ज्ञायक जगनायक, जीव अनन्त उबारे ।
बिन कारण भ्राता जगत्राता, दृगसुख शरण तिहारे ॥ ३ ॥

२३—राग भैरूंनर [श्रीपद्मप्रभु]

बन्दन कूं प्रभु बन्दन कूं हम आये हैं, पदम प्रभु बन्दन कूं ॥टेक ॥
जन्म लियो कोशाम्बी नगरी, भविजन पाप निकन्दन कूं ॥ १ ॥
मात सुसीमा गोद खिलाये, पूजूं धारण नन्दन कूं ॥ २ ॥
बन्श इक्ष्वाकु कृतारथ कीनो, दूर किये दुखद्वन्दन कूं ॥ ३ ॥
नयनानन्द कहैं सुनि स्वामी, काटि मेरे भव फन्दन कूं ॥ ४ ॥

२४—रागसारङ्ग (श्रीसुपार्श्वनाथ)

देव सुपारस ध्याइये, अरे मन देव सुपारस ध्याइये ॥ टेक ॥
भव आताप निवारण कारण, घसि घनसार चढाइये ॥ १
अक्षत ले प्रभु चरण चढावो, तुरत अखय पद पाइये ॥ २ ॥
भरि पुष्पांजली पूजन कीजै, मद कन्दर्प नसाइये ॥ ३ ॥
अपनी क्षुधा हरण के कारण, उत्तम चरु अरचाइये ॥ ४ ॥
नाशे मोह महा तम भारी, दीपक ज्योति जगाइये ॥ ५ ॥
करमवन्श बिध्वन्स करन को, धूप दशांग जराइये ॥ ६ ॥
फलते फल शिव पद को पावै, नयनानन्द गुणगाइये ॥ ७ ॥

२५—राग पीलू-पंजाबी ठुमरी [श्रीचंद्रप्रभु]

दिल लागा मेरावे, भलादिल लागा मेरावे, श्रीचंदाप्रभुदेवाले ॥ टेक ॥
भव अनन्त उद्धार कियो तुम, ऐसे दीन दयाले ॥ १ ॥

जाके बचन सुनत भय भागे, टूट पड़ें अघजाले ॥ २ ॥
दरस देखि मेरे नैन सुफल भये, चरण परसि कैं भाले ॥ ३ ॥
गुण सुमरत भयो जनम सफल अरु, पुण्य कलपतरुडाले ॥ ४ ॥
कहत नैनसुख भवसागर सें हे प्रभु वेग निकाले ॥ ५ ॥

२६—राग झंझोटी [श्री शीतलनाथ]

हे परसिकै मूरति शीतल की मेरा शीतल भयो शरीर ॥ टेक ॥
परमानन्द घटा उर छाई, बरसे आनन्द नीर ॥ १ ॥
भागी जनम जनम की मेरी, भव तृष्णा की पीर ॥ २ ॥
मुद्राशांति निरखि भयभागे, ज्यों घन लगत समीर ॥ ३ ॥
दास नैनसुख यह बर मांगे, हरो नाथ भव पीर ॥ ४ ॥

२७—रागबरवा [श्री पुष्पदंत]

गावोरी अनंद बधाई मोरी आली, पुष्पदंत जिन जन्मलियो है। टे.
काकन्दीपुर बामादेउर, वैजयंत से आन चयो है॥ १ ॥
वन्श इक्ष्वाकु सफल कियो जाने, कुल सुग्रीव कृतार्थ भयो है ॥२॥
सकल सुरासुर पूजन आये, सुरगिरि पै अभिषेक कियो है ॥ ३ ॥
नैनानन्द धन धन वे प्राणी, जिन प्रभु भक्ति सुधार वुपियो है ॥४॥

२८—रागनी झंझोटी [श्रीश्रेयांसनाथ]

श्रीश्रेयाँसजिनेश्वर नैं सखि, सकल कर्मदल हरे हरे ॥ टेक ॥
सजिसंयम सन्नाह महाभट, धीर धरा पग धरे धरे ॥
क्षमा ढाल समभाव खड़्ग ले, अष्टकर्म संग अरे अरे ॥ १ ॥

देखि अनन्त बली जगनायक, चारों घातक टरे टरे ॥
चार अघातक शक्ति बिना बिन, मारे आपही मरे मरे ॥ २ ॥
निज अनुभूति परी पर हाथन, ताकारन लखि लरे लरे ॥
जब आई अपने करमें तब, सकल मनोरथ सरे सरे ॥ ३ ॥
जै जै कार भयो त्रिभुवन में, इन्द्रादिक पग परे परे ॥
नैनानन्द मन बचन कायसूं, हित कर बन्दन करे करे ॥ ४ ॥

२९—राग जङ्गला-ठुमरी [श्रीवासुपूज्य]

पूजत क्यों नहिं रे मतिमंद, बासपूज्य जिनपद अरविंद ॥ टेक ॥
बाल ब्रह्मचारी भवतारी, परम दिगम्बर मुद्रा धारी ।
दुविधि परिग्रह संगतजोजिन, गुण अनन्त सुख संपतसिंधु ॥१॥
ध्याता ध्येयं ध्यान विभाशी, ज्ञाता ज्ञेयं ज्ञान प्रकाशी ।
पापातिक विमुक्तमलौघं, तारण तरण सहज निरद्वन्द ॥ २ ॥
महीमा वर्णत गणधर हारे, बचन अगोचर हैं गुणसारे ।
परसत सात जनम लगदरसे, भामंडल अतिशय अचलंत ॥ ३ ॥
प्रातिहार्य वसुमङ्गल दर्बं, सेवत सुर नर मुनि गण सर्वं ।
पांचबार जाहि पूजन आये, चंपापुर सुर इन्द्र फनेंद्र ॥ ४ ॥
बासदेव कुल चंद्र उजागर, जयो जयावति सुत गुण नागर ।
दृगसुख वीतराग लखि तुमकूं, आये शरण काटि भवफंद ॥५॥

३०—रागनी धनाश्री (बिमलनाथ)

अब मोहि बिमल करो, हे बिमल जिन अबमोहि बिमलकरो । टेक
धर्म सुधारस प्यास जगत गुरु, विषय कलंक हरो ।
बीतरागता भाव प्रकाशो, शिव मग माहिं धरो ॥ १ ॥

तुम सेवा का यह फल चाहूं, क्रोध कषाय टरो।
माया मान लोभ की परणति, ये जग जाल जरो ॥ २ ॥
जब लग जगत भ्रमण नहीं छूटे, ऐसी टेव परो।
सच्चे देव धरम गुरु सेऊं, नयनानन्द भरो ॥ ३ ॥

३१—रागनी धानीगौरी के ज़िले में ग़ज़ल के तौर पर

[श्री अनंतनाथ]

स्वामी अनंत नाथ चरनों के तेरे चेरे हैं ॥ टेक ॥

सेवा करी न तेरी तकसीर है यह मेरी जी।
तुमको नहीं है चाह पापों ने हमको घेरे हैं ॥ १ ॥
विभ्रम मुझे जो आया, संशय ने फिर भ्रमायाजी।
पकड़ी करम ने बांह ले झारवें से गेरे हैं ॥ २ ॥
करता हूँ तेरी आसा, मेटो जगतका बासाजी।
तुमहो त्रिलोकसाह, संजम के भाव मेरे हैं ॥ ३ ॥
चरणों में राख लीजे, आनंद नैन दीजे जी।
अब तो बता दे राह, जैसे हैं तैसे तेरे हैं ॥ ४ ॥

३२—राग श्यामकल्याण [श्रीधर्मनाथ]

तारधनी अबमोहि जगत से तारधनी, अब मोहि जगतसे ॥टेक॥

भटकत भटकत भवसागर में, भोगी त्रिबिधि बिपत्ति घनी ॥ १ ॥
लख चौरासी जो दुख देखे, सो बिपदा नहीं जाय गिनी ॥ २ ॥
धरमनाथ प्रभु नाम तिहारो, धरम करौ मोपै आन बनी ॥ ३ ॥
करि उद्धार निकारि जगत् से, दगसुख भक्ति बिधान भनी ॥ ४ ॥

३३—रागनी खम्माच की ठुमरी [श्रीशान्तिनाथ]

हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे, हो विघन गये भजिकें प्रभू के पद जजि कें, हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे ॥ टेक जीव अजीव सकल दरबनि की, जी बखानी गुण परजै, अनघ धुनि गरजै ॥१॥ सब भाषा मय बचन प्रभु के, जी सभी के मन भावैं। भरम विन सावैं ॥२॥ बिन कारण जग जंतु उभारे जी, नयनसुखदाता, सभी के जग त्राताजी ॥

३४—खम्माच की ठुमरी (श्रीकुंथुनाथ)

आज आली श्रीमती जननि सुत जायोरी । आज आली । टेक ।
सोम वंश हथनापुर नगरी, सूरज नृप सुख पायोरी ॥ १ ॥
लख योजन गज सजिकें सुरपति, उत्सवकूं उमगायोरी ॥ २ ॥
पांडुक बन सिंहासन ऊपर, क्षीरो दधि जल न्हायोरी ॥ ३ ॥
कुंथु कुंथु कहि संस्तुति कीनी, तांडवनृत्य करायोरी ॥ ४ ॥
सखियनमिलिजिन मंगल गाये, मोतियनचौक पुरायोरी ॥ ५ ॥
सोंपि पिता जननी गयो सुरपति, नैनानंद गुण गायोरी ॥ ६ ॥

३५—रागदेश (श्रीअरहनाथ)

तुम सुनोरी सुहागन चतुरनार, अरहनाथ प्रभुभये बैरागी ।टेक।
सखि लख चौरासी गयंद तजे, जो कंचन मोतियन माल सजे ।
तजिघोटक ठाराकोड़ि सखी, अरु छयानवै सहस्र त्रिया त्यागी ॥१॥
सखि चौदह रतन बिसार दिये, अरु पंच महाव्रत धारि लिये ।
तजि वस्त्र अभूषण जोग लिये, भये परम धरम से अनुरागी ॥२॥

सखि निरखि निरखि पग गमनकियो, समनाधरिकर्मविपाकसह्यो
चलो परम पुरुष के बंदन कूं, अब केवल ज्ञान कला जागी ॥३॥
हथनापुर तीरथ प्रगट करो, जहां गर्भ जन्म तप ज्ञान वरो।
नयनानंद पायन आनि परो, वाही के चरणसू लौ लागी ॥४॥

३६—रागनी सोरठ (श्रीमल्लिनाथ)

थे देखो आली री मल्लिनाथ कुमार ॥ टेक ॥ माता जाकी प्रभावती देवी है जी, तात कुंभ भूपाल, त्यागो सब परिवार ॥१॥ तजि मिथुलापुर जोग लियो है, री वंश इक्ष्वाकु विसार कीनो सुवन बिहार ॥२॥ भोगो राज न व्याह न कीनो री, बाल ब्रह्म तपधार, कीनो धैर्य अपार ॥३॥ कहत नैनसुख जोग जुगति से, री पहुँचे मुक्ति मझार, गावो मंगलचार ॥४॥

३७—राग विहाग (श्रीमुनिसुव्रतनाथ)

अब सुधि लेहु हमारी, मुनि सुव्रत स्वामी ॥ टेक ॥
तुमसो देव न जग में दूजो, मैं दुखिया संसारी ॥ १ ॥
तुमहीं वैद्य धनन्तरि कहियो, तुमही मूल पंसारी ॥ २ ॥
घट घट की सब तुमही जानो, कहा दिखाऊं नारी ॥ ३ ॥
करम भरम ममराग नसावो, इन मांहि दुख दिये भारी ॥४॥
तुम जग जीव अनंत उबारे, अबके बार हमारी ॥ ५ ॥
दृग सुख तारण तरण निरखि के, आयो शरण तिहारी ॥६॥

३८—रागनी जय जयवंती [श्रीनमिनाथ]

कर बहु भागन आलस त्यागन, नमि जिन पति तेरे पुत्र भयो है ॥ टेक ॥ तू सुख नींद मगन भइ सोवत, हम प्रभु

कि सुधाम्बु पियो है ॥ १ ॥ जागहु तात विजय रथ राजा,
प्र कुल चन्द्र उद्योत लियो है ॥ २ ॥ वरषत रतन सुधारस
र घर, मिथुलानगर दरिद्र गयो है ॥ ३ ॥ विप्रा मात उठी
नि संस्तुति, फिरि प्रभु गोद पसार लियो है ॥ ४ ॥ नील
मल पग माँहि विराजत, वन्श इक्ष्वाक कृतार्थ कियो है ॥ ५ ॥
। सुखदास आस पूरण सब, सुख दुख द्वन्द बिसार दियो है ॥६॥

३९—राग जङ्गला और माड़ की ठुमरी (श्रीनेमिनाथ)

नेमि पियाके ढिग मोहि जानदे, मैं वारी नेमि पियाके ढिग
हि जानदे ॥ टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठा सब संसार ।
री जग की ममता मोहि, करमों के लेख मिटानदे ॥ १ ॥ भजन
रूंगी जोग धरूंगी, भजन जगत में सार । भजन बिना मैं बहु
ख पाये, मेरी भवबाधा मिट जानदे ॥ २ ॥ सब जग स्वारथ
सगारो, अपना सगा न कोय । अपना साथी धरम है, मोहि
। सागर तिरजान दे ॥ ३ ॥ भोग बिना निरधन दुखारा,
गाबस धनवान । नेमि बिना सब जग दुखियारी, नेमी से नेम
ान दे ॥ ४ ॥ नेम किये बहुते जन सुरझे, मेरे नेमि अधार ।
सुख राजुलि कहत सखी सुनि अब मोहि नेमि लहाण दे । ५।

४०—रागपरज [श्री पार्श्वनाथ]

त भजि रे मन परम सुधारस, तजि आरस पारस भगवान । टे०
र कुधात लगत जिस कांचन, बचन सुनत मिटि जाय अज्ञान ।
त पद बसु कर्म विनाशैं, होय त्रिविध संकट अवसान ॥ १ ॥
ल होय उदंगल बिघटैं, प्रगटैं ऋद्धि समृद्धि अमान ॥
भये धरणेन्द्र छिनक में, बहुते जीव गये निर्वान ॥ २ ॥

अश्वसेन वामा कुल नन्दन, जग बन्दन बन्धन विघटान ।।
प्राणत स्वर्ग थकीचय आये, नगर बनारस जन्मे आन ।। ३ ।

नव कर उच्च सजल घन तन पग, पन्नग वन्श इक्ष्वाकु प्रमान ।।
अवधिशताब्द् धरण दुखदारुण, हरण कमठ शठ विघन वितान । ४

विषम रूप भव कूप विषे हम, पावत हैं प्रभु दुःख महान ।
नयनानंद बिरद सुनि तुमरो, गावत भजन करो कल्यान ।। ५ ।

४१—रागपरज [श्रीवर्द्धमान]

जय श्री वीर जयति महावीरं, अतिवीरं सन्मति दातार ।। टेक ।

वर्द्धमान तुमरो जस जग में, तुम अन्तिम तीर्थंकर सार ।
पंचम काल विषैं तुम शासन, करत जगज्जीवन उद्धार ।। १ ।।

षोड्स स्वर्ग थकी चय आये, साढ शुकल छठ गर्भं मझार ।
चैत्र शुकल त्रोदशी के अवसर, कुंडलपुर तुमरो अवतार ।। २ ।।

सिद्धारथ नृप बाप तुम्हारे, त्रिशला देवी मात तिहार ।
सात हाथ तन तुंग तुम्हारो, नाथ वन्श के तुम सिरदार ।। ३ ।।

सिंह चिह्न तुमरे पद सोहै, माघ असित द्वादशि जग छार ।
दशमी असित बैसाख भये तुम, सकल दरव दरसी इकबार ।। ४

पावांपुर सरवरपै प्रभु तुम, ध्यान धरो संयोग विसार ।
कार्तिक कृष्णा चौदसि की निशि, मावस प्रात वरी शिवनार ।।५।।

दुखम सुखम के तीन बरस अरु, शेष रहे वसुमास जवार ।
तादिन तुम्हें रतन दीपकतें, पूजैं सुर नर करि त्योहार ।। ६ ।।

छस्से पांच बरस जब बीते, तब विक्रम सम्मत विस्तार ।
जब लग रहै धरा नभ मंडल, नयनानंद जपो नवकार ।। ७ ।।

४२—राग बरवा।

ब धो मिलैं गुरुदेव हमारे, भर जोबन वनवास सिधारे ॥टेक॥
ातम लीन अनाकुल देवा, जाके सुमति उदै स्वयमेवा ॥ १ ॥
गहित हेत वचन विस्तारैं, सो गुरु भौ भौ सरण हमारे ॥ २ ॥
ाट करैं शिव मारग नीका, बरस रहो मनु मेघ अमीका ॥ ३ ॥
री मीत बराबर जाकैं, कांचन कांच उपल सम ताकैं ॥ ४ ॥
हल मसान उद्यान सरीखे, जीवन मरन बराबर दीखे ॥ ५ ॥
रुणा अङ्ग रतन त्रय धारी, नैनानंद ताहि धोक हमारी ॥ ६ ॥

४३—राग भैरुंनर।

चरणन से आज मोरी लागी लगन ॥ टेक ॥
हाथ कमंडल कर में पीछी, मिले गुरु निस्तारन तरन।
बन में बसैं कसैं इन्द्रीनिकूं, धारैं करुणा रुप नगन ॥
हित मित वचन धरम उपदेशैं, मानो वर्षन मेघ झरन।
नैनानन्द नमत है तिनकूं, जो नित आतम ध्यांन मगन ॥

४४—रागनी झंझोटी खम्माचका जिला—ठुमरी पूर्वी।

बहनिया मेरा अङ्गना पावन भयोरी, हे दयाल गुरु आये, ॥
ाल गुरु आये, री बहनियां मेरा अङ्गना पावन भयोरी ॥टेक॥
के पंथ दरसावन हारे री, हे रतन त्रय साथें, मयूरपिच्छ
थैंरी युगत कर मंडल भयोरी ॥ १ ॥ गमन ईर्याकर तपधारेरी,
विसारे मान माया, उवारैं षट कायारी, असन म्हारे आगम
ान भयोरी ॥ २ ॥ पांच प्रकार रतन की धारारी, बिबुध वृन्द
, हे जै जै धुनि टेरैं री, सबन हग आनन्द छावन भयोरी ॥३॥

४५—राग जंगला—ठुमरी।

इक जोगी असन बनावै, तसु भखत असन, अघन सन होत ॥टेक

ज्ञान सुधारस जल भरलावे, चूल्हा शील बनावै।
करम काष्ठकूं चुग चुग बालै, ध्यान अगिनि प्रजलावै जी ॥ १ ॥
अनुभव भाजन, निजगुण तंदुल, समता क्षीर मिलावै।
सोहं मिष्ट, निशंकित व्यंजन, समकित छौंक लगावै जी ॥ २ ॥
स्याद्वाद, सतभङ्ग मसाले, गिणती पार न पावै।
निश्चय नयका, चमचा फेरे, विरध भावना भावैजी ॥ ३ ॥
आप पकावै, आपहि खावै, खावत नाहिं अघावै॥
तदपि मुक्ति, पद पंकज सेवै, नयनानन्द सिरनावैजी ॥ ४ ॥

४६—रागधना श्री अथवा सोरठ।

सतगुरु परम दयाल जगत में, सतगुरु परम दयाल ॥ टेक।

सब जीवनि को संशय मेटैं, देत सकल भय टाल।
दुख सागर में डूबत जनकों, छिन में देत निकाल ॥ १ ॥
सुरग मुकति को पंथ बतावें, मेटि करम भ्रम जाल।
धरम सुधारस प्याय हरैं अघ, छिन में करत निहाल ॥ २ ॥
स्वान सिंह सतगुरु ने तारे, तारे गज विकराल।
सुगुरु प्रताप भये तीर्थंकर, अरु तारे श्रीपाल ॥ ३ ॥
पांच शतक मुनि कोल्हू पोड़े, दंडक नृप चांडाल।
होय जटायु सुगुरु पद सेये, पायो सुरग विशाल ॥ ४ ॥
बलि से दुष्ट सुपंथ लगाये, सतगुरु विष्णु दयाल।
नयनानन्द सुगुरु सम जग में, कौन करै प्रतिपाल ॥ ५ ॥

[४७]

अब मुझे सुधि आई, जैन बाणी सुनि पाई ॥ टेक ॥

काल अनादि निगोद वेदना, भुगती कहिय न जाई ।
पड़ा नरक चिरकाल बिलायो, कोइ न शरण सहाई ॥ १ ॥

कबहुँक कंठ कुठारनि चीरो, दियो बांधि लटकाई ।
कबहुँक चार डारि कोल्हू में, तिलवत देह पिलाई ॥ २ ॥

ताते तेल भाड़ में भुन्यो, कबहुँक शूल दिखाई ।
आंखन नून कान में डाटे, नाला चीर बगाई ॥ ३ ॥

वैतरनी में गेर घंसीटो, गाल कुधात पिलाई ।
तांबा प्याय लोह की पूतली, ताती कर लिपटाई ॥ ४ ॥

मात पिता युवती सुत बांधव, संपति काम न आई ।
कबहुँक पशु पर जाय धरी तहां, बध बंधन अधिकाई ॥ ५ ॥

खनन तपन दाहन अरु धौंकन, बहुविधि मरन कराई ।
समन अमन दोउ भांति भरे दुख, छेदन वेदन पाई ॥ ६ ॥

कबहुँक मानुष देह बिडंबो, विषयनि में लवलाई ।
अन्ध पंगु अरु रावरंक भयो, रोग सोग दुखदाई ॥ ७ ॥
कुष्ठ जलोदर और कठोदर इष्ट वियोग बुराई ।
देव भयो पर संपति निरखत, झुरझुर देह जराई ॥ ८ ॥

वाहन जाति तथा भव पूरण, निरखि रहो पछिताई ।
यह विधि काल अनन्त भजो हम, मिथ्या भाव कषाई ॥ ६ ॥
अव्रत जोग फिरा भटकत ही, सम्यक दृष्टि न आई ।
अब जिन धर्म परम रस बरसे, भव तृष्णा न रहाई ॥ १० ॥
दग सुखदास आस भई पूरण, धन जिन वैन सहाई ॥

४८—राग धनाश्री ।

जिन मत पर निधान, जगत में जिनमत परम निधान ।।टेक
जिन मारग तैं उरझी सुरझे, छूटैं पाप महान ।
अरु जियाकूं अनुभव सुधि आवै, भागै भरम वितान ।। १ ।।
वस्तु स्वरूप यथावत दरसै, सरसै भेद विज्ञान ।
सब जीवनि पर करुणा उपजै, जानै आप समान ॥ २ ।।
शूकर सिंह नवल मर्कट को, वर्णन आदि पुरान ।
भील भुजङ्ग मतंगज सुरझे, कर याको सर धान ।। ३ ।।
अञ्जन आदि अधम बहु उतरे, पायो सुरग विमान ।
नर भव पाय मुकति पुनि पाई, नयनानन्द निधान ।। ४ ।।

४९—रागनी हंडोल—मल्हार ।

सुनोजी सुनोजी समभावसूं श्रीजिन बचन रसाल ।। टेक ।।
द्रव्य करम ने तुम ठगे, भाव करम लये लार ।
नोकर मनिसूं बांधिये, दीनो चहुँ गति डार ।। १ ।।
कबहुँक नर्क दिखाईयो, कबहुँक पशु पर जाय ।
नव ग्रीवक लौं ले चढ़े, पटको भाव डिगाय ।। २ ।।
जिसने जिनवच नहिं सुने, विकथा सुनी अपार ।
नर भव चिंतामणि रतन, दियो सिंधु में डार ।। ३ ।।
पंच महाव्रत ना लिये, श्रावक व्रत दिये छार ।
तिनकूं नरक निकेत में, मारो चाम उपार ।। ४ ।।
मति थोड़ी विपत्ता घणी, कहै कहालों कौन ।
थोड़ी में बहुती लखो, होय सुघर नर जौन ।। ५ ।।
पायो धरम जहाज अब, पायो नरभव सार ।
नैन सुक्ख भवसिंधु से, उतर उतर हो पार ।।६।।

५०—राग काफ़ी चाल होली की ।

जिन वाणी को सार न जानी ॥ टेक ॥ नरक उधारण, शिव सुख कारण, जनम जरा मृतहानी । उदर जलोदर, हरण सुधारस, काटन करम निहानी, बहुर तेरे हाथ न आनी ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि अमृत, एक जनम सुखदानी । दूजे जनम फिर होय भिखारी, यह भवभ्रमण मिटानी । तजो दुर्व्यसन कहानी ॥ २ ॥ व्याह सुता सुत बांटिलूं भाजी, हरिलूं नारी बिरानी । ऐसे सोचत जात चले दिन, होत सरासर हानी । समझ मन मूरख प्रानी ॥ ३ ॥ भव वारिध दुस्तर के तरणकूं, कारण नाव बखानी । खोल नयन आनन्द रूप से, धर सम्यक्‌ अज्ञानी । मोक्षपद मूल निशानी ॥ ४ ॥

५१—राग यमन कल्याण ।

जडता जिनराज बिना कौन हरै मेरी ॥ टेक ॥

सुनत ही जिनेंद्रबैन, भयो मोहि अतुलचैन, सम्यकके अभाव मैने कीनी भव फेरी ॥ १ ॥ अतुल सुक्ख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्य को निधान, काया में बिराजमान, मुक्ती मेरी चेरी ॥ २ ॥ द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भावकर्म असंयुक्त, निश्चयनय लोक मात्र, परजय बपुघेरी ॥ ३ ॥ जैसे दधिमांहि घीव तैसे जड़मांहिजीव देखी हम अपने नैन, आनन्द की ढेरी ॥ ४ ॥

५२—राग भैरूनर ।

संशय मिटै मेरी संशय मिटै, जिनवानी के सुने से मेरी संशय मिटै ॥ टेक ॥ पाप पुण्य का मारग सूझै भवभवकी मेरी

व्याधि कटै ॥ १ ॥ और ठौर मोहि विकलप उपजै ह्यां आकै आनन्द डटै ॥ २ ॥ निज पर भेद विज्ञान प्रकाशैं विषयन की मेरी चाह घटै ॥ ३ ॥ बानी सुन नैनानँद उपजै मोह तिमर का दोष हटै ॥ ४ ॥

५३—रागनी खम्माच की ठुमरी मल्हार।

जिया तूने तजा धरम हितकारी। ऐसा जग जन तारक, कलमलहारक, अधम उधारक रतनसार, तैंने तजा धरम हित-कारी ॥ टेक ॥ तेरे कर्म बंध तोर डारे, तीनों दुक्खतैं उबारै भवतैं निकारै अघहारी ॥ १ ॥ नरक निकार लेय, तीर्थराज पद देय, धरमसो न कोऊ उपगारी ॥ २ ॥ नैनसुख धर्मसेवो, आतमस्वरूप वेवो, लागे पार खेवो तत्कारी ॥ ३ ॥

५४—धनसारी।

जिनवानी रस पी हे जियरा जिनवानी रसपी ॥ टेक ॥
तुम हो अजर अमर जगनायक, ज्ञानसुधा सरसी।
तेरो हरनहार नहीं कोई, क्यों मानत डरसी ॥ १ ॥
करम लिपत करमनतैं न्यारो, केवल मैं दरसी।
ज्यों तिल तेल मैल सुवरण मे, क्यों पुद्‌गल परसी ॥ २ ॥
जबलग परकूं निजकर मानत, तबलग दुखभरसी।
छूटै नाहिं काल के करसैं, मर मर फिर मरसी ॥ ३ ॥
पूजा दान शील तप धारो, सब पातिग टरसी।
नयनानंद सुगुरुपद सेवो, भवसागर तरसी ॥ ४ ॥

५५- रागनी जंगला झंझौटी।

सुगुरुकी बानीजी सुगुरुकी बानी-तेरे दिलमें क्यों न समानी सुगुरु की बानी-अरे अभिमानी सुगुरु की बानी ॥ टेक ॥ बीतराग हिम गिरतें निकसी, यह गंगा सुखदानी, सप्तभिंगा, अमल तरंगा, भव आताप मिटानी ॥ १ ॥ जग जननी परमारथ करनी-भाषी केवल ज्ञानी सत्य सरूप यथास्थ निर्णय, सो तैंने विसरानी ॥ २ ॥ जामें बंध मोक्षकी कथनी, सुन सुरझैं बहु प्राणी-पशु पक्षी से पाय मनुष पद, होय रहे शिवथानी ॥ ३ ॥ तैं मिथ्या मत देव धरम भज पियो मूढ़ मद पानी कीनी भूत ऊन की सेवा—मिली न कौड़ी कानी ॥ ४ ॥ भर्म अविद्या बस या जग में, खाक बहुत ही छानी। अब जिन बैन गंगतट सेवो, दृग सुख शिव सुखदानी ॥ ५ ॥

५६—दूंदत्रोटक वृत सरस्वती अष्टक।

मुनि भाव तरंग विशुद्ध तरे-रज पाय प्रताप विभाव हरे मद मोह मरुस्थल भेज जवे, जय वीर हिमाचल बाग भवे ॥ १ ॥ षट नंद तपासर की नगरी, लख तोही मिटैं भव के भयरी, जड़ जीव चिताघन रूप नवे ॥ २ ॥ भव कानन आंगन भीर भरयो, बहुवार कुजन्म कुयोनि परयो जग शूल निमूल निवज्र दवे ॥३॥ मम केश करांकुर जोरि धरै—लख कोट सुमेरु सिवाय परै, दृग पात पिता जननी सुचवे ॥ ४ ॥ लख सिंधु समाय न अश्रु ममं—मम सर्व हितू अन एक ममं, अति खेद भरे कर्मोद्भवे ॥ ५ ॥ अब आन परयौ तुमरे दरपै—अपवर्ग धरो हमरे करपै, जग जाल विमोचन भाल नवे ॥ ६ ॥ तुम नाम हरै भव खेद घना—

जिम तीव्र तपोहत पांथ जनान, पद्मासर आसर बात भवे ॥ ७ ॥
सब देवयजे अनतोष भयो—लखरूप कृतारथ जन्म थयो—चख
अमृत वारिध कौन पिवे ॥ ८ ॥

गीता छंद ।

कुज्ञान छौनी मोक्ष दैनी आतमा दरसावनी ।
घट पट प्रकाशन जैन सासन संत जन मनभावनी ॥
रविनंद जुग जुग अब्द विक्रम साठ सित तेरस ससी ।
अरदास दृग सुख दासकी सुन नाश भव बंधन फंसी ॥

५७—अर्हंतस्तुति बरवेकीठुमरी ।

लगे नैना समोसृत वारेसैं, हे वारेसें जग प्यारेसैं ॥ टेक ॥
विश्व तत्त्व ज्ञाता जगत्राता, करम भरम हर तारेसें ॥१॥
तारण तरण सुभाव धरो जिन, पार लंघावन हारेसें ॥२॥
बिन स्वारथ परमारथ कारण, डूबत काढ़न हारेसें ॥३॥
दृगसुख परम धरम हम पाया, स्याद्वादमत वारे सें ॥४॥

५८—रागमांड देश की ठुमरी ।

प्रभु तार तार भवसिंधुपार-संकटमंझार-तुमहीअधार—टुक दे सहार, बेगी काढो मोरी नय्या ॥टेक॥ परमाद चोर कियो हम पै ज़ोर, भगगोतनोर, दिये मझमें बोर तुम सम न और तारन तरवय्या ॥ १ ॥ मोहि दंड दंड दियो दुख प्रचंड, कर खंड खंड चहुँगति में भंड तुम हो तरंड—तारो तारो मोरे संय्यां ॥२॥ दृग सुखदास तोरी है हिरास-मेरी काढ़ फांस, हर भवको बास, हम करत आस—तू है जग उधरय्या ॥ ३ ॥

५६—खमाचकी ठुमरी।

सेवैं सब सुरनर मुनि तेरोद्वार—तू है धरम अरथ काम मोक्ष को दिवय्या, तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके बार ॥ टेक ॥ अतुल दरसपुन, अतुल ज्ञान घन, अतुल सुख्य, बलको न पार ॥१॥ सकल छतरपति, करत भगति अति, चरण परत मस्तक-पसार ॥ २ ॥ तुमकूं नमाय माथ, कौन पै पसारूं हाथ, तुषको-दवय्या, देत लाखन गार ॥ ३ ॥ तुम बिन रागदोष, देत हो सबन मोक्ष, लिये हैं पजोष, सबही प्रकार ॥ ४ ॥ तुम सनमुख रहे, तिन्हें नैन सुख भये, तुम से विमुख, रुले जग मझार ॥ ५ ॥

६०—रागभैरवी

भाग जगोजी, आजतो म्हारो भाग जगोजी ॥ टेक ॥
आज भयो मेरा जन्म कृतारथ, आज भवोदधि पार लगोजी ॥ १ ॥
मैं तुम ढिग कबहूँ नहिं आयो, कर्मन के बस आप ठगो जी ॥२॥
बैनतेय सम दरस तिहारो, निरखत काल भुजङ्ग भगोजी ॥३॥
आज भई मेरी मनसा पूरण, आजही नयनानन्द पगोजी ॥ ४ ॥

६१—रागनी गारा और जिला।

दरशन के देखत भूख टरी ॥ टेक ॥
समोशरन महावीर विराजैं, तीन छत्र शिर ऊपर छाजैं।
भामण्डलसैं रवि शशि लाजैं, चँवर दुरत जैसे मेघ झरी ॥ १ ॥
सुरनर मुनि जन बैठे सारे, द्वादश सभा सुगणधर ग्यारे।
सुनत धरम भये हरष अपारे, बानी प्रभु जी थारी प्रीतिभरी ॥२॥

मुनिवर धरम और गृहवासी, दोनू रीति जिनेश प्रकाशी ।
सुनत कटी ममता की फांसी, तृष्णा डायन आप मरी ॥ ३ ॥
तुम दाता तुम ब्रह्म महेशा, तुमही धनन्तर वैद्य जिनेशा ।
काटो नयनानन्द कलेशा, तुम ईश्वर तुम राम हरी ॥ ४ ॥

६२—रागनी जंगला-ठुमरी ।

मिटादो प्रभु व्यथा हमारी जी, एजी हम आये हैं दर्शन काज ॥ टेक ॥ सेठ सुदर्शन को प्रण राखो शूली सेज समान । अगनिसें सीता उबारी जी ॥ १ ॥ नाग नागनी जरत उबारे, दियो मन्त्र नवकार । मरन गति उनकी सुधारी जी ॥ २ ॥ त्रिभुवननाथ सुनो जस तेरी, जब आयो तुम पास । करो ना प्रभु मेरी गुज़ारीजी ॥ ३ ॥ भटकत भटकत दर्शन पायो जनम सफल भयो आज । लखी जो मैंने मुद्रा तुम्हारी जी ॥ ४ ॥ मैं चाहत तुम चरण शरण गत, मांगत हूँ तजि लाज । सुनोजी नैनानन्द की पुकारी जी ॥ ५ ॥

६३—रागनी भैरूंनर-जंगला झंझौटीका जिला

अबसे तेरा मत जाना, तभी से आपा पिछाना ॥ टैक ॥
निज पर भेद विज्ञान प्रकाशो, तत्व प्रकाशे नाना ।
दर्शन ज्ञानचरित्र आराधो, धरो जैन मतबाना ॥ १ ॥
काल अनादि भजो मिथ्यामत, धर्म मर्म अब जाना ।
अब टूटी ममता की फांसी, समता ओर लुभाना ॥ २ ॥
अब ही मैं यह बात पिछानी, यह भव बन्दीखाना ।
करम बन्ध जग में दुख पाऊं, मैं त्रिभुवन को राना ॥ ३ ॥

कहत नैनसुख तार तार प्रभु, तुम हो सतगुरु दाना।
नातर विरद लजावे तेरो, देत सकल जग ताना ॥ ४ ॥

६४ रागदेश

ठाड़े जी गुसइय्यां तेरे दरबारे में, स्वामी म्हारा वे ॥ टेक ॥
करम हमारे बँध गये भारे जी, हो इनकूं दीजे निकार ॥ १ ॥
विघनहरन तुम सबही के दाताजी, हो अतिशय अगमअपार ॥२॥
निरखत रूप पुरन्दर हारे जी, हो जस गावत गणधार ॥ ३ ॥
मनमयूर नैनानन्द मानत जी, सुन सुन बचन तिहार ॥ ४ ॥

६५—रागनीजंगला।

भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजे,
अजि मैं तो दर्शनकारण आया, जी महाराज दर्शन दीजै ॥टेक॥
कोई तो मांगे प्रभु स्वर्ग सम्पदा, मैं थानैं पूजन आया ॥ १ ॥
इन्द्र न्हुलावैं तुमैं क्षीरोदधि से; मैं प्राशुक जल लाया ॥ २ ॥
इन्द्र चढ़ावैं प्रभु रतन अमोलक, मैं तंदुल चुग लाया ॥ ३ ॥
इन्द्र करैं प्रभु तांडव नाटक, मैं जस गावन आया ॥ ४ ॥
कहै नैनसुख दर्शन करके, अब नर भौ फलाया ॥ ५ ॥

६६—राग कालंगड़ा।

जो तुम प्रभु हो दीनदयाल, तो तुम निरखो मेरा हाल ॥ टेक ॥
नरक निगोद भरे दुःख भारी, हांसे निकस भ्रमो जगजाल।
जल थल पावक पवन तरोवर, धर धर जन्म मरो बेहाल ॥१॥
क्रम पिपीलिका भ्रमर भये हम, विकलत्रय की सीखी चाल।
फिर हम भये असैनी सैनी, चढ़ि नव ग्रीव गिरे ततकाल ॥२॥

कहैं नैनसुख भवसागर सें, बांह पकरि मोहि वेगि निकाल।
समरथ होयहुँ मैंन उवारो, तो न कहूं फिर दीनदयाल ॥ ३ ॥

६७–कुदेवत्याग विषय-राग-ठुपरी जंगला झंझौटी।

मैं दरश बिना गया तरस, दरश की महिमा न जानी जी ।।टेक
मैं पूजे रागी देव गुरु, सेये अभिमानी जी।
हिंसा में माना धरम सुनी मिथ्या मत बानी जी ॥ १ ॥
मैं फिरा पूजता भूत ऊत अरु सेढ मसानी जी।
मैं जंत्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानी जी ॥ २ ॥
मैं भैंसे बकरे भेड़ हते बहुतेरे प्राणी जी।
नहिं हुवा मनोरथ सिद्धि भये दुर्गति के दानी जी ॥ ३ ॥
मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानी जी।
नहीं आसा तृष्णा मरी सुगुरु की शीख न मानी जी ॥ ४ ॥
मैं फिरा रसायन हेत मिली नहीं कौड़ी कानी जी।
नहिं छुटा जन्म अरु मरन ख़ाक बहुतेरी छानी जी ॥ ५ ॥
लई भुगत चौरासी लाख सुनी नहीं तेरी बानी जी।
हुवा जन्म जन्म में ख्वार धरम की सार न जानी जी ॥ ६ ॥
तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घट मांहि समानी जी।
हो तुम ही तारण तरण तुमही हो मुक्ति निसैनी जी ॥ ७ ॥
है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानी जी।
हो षटमत में परधान नैनसुखदास बखानी जी ॥ ८ ॥

६८—राग खम्माच।

लागा हमारा तोसे ध्यान, दाता भवसे निकारो मोकों जी ।टेक।
तुम सर्वज्ञ सकल जग नायक, केवल ज्ञान निधान ॥ १ ॥
जीव दयामई धर्म तिहारो जी, षट मत मांहि प्रधान ॥ २ ॥

तुम बिन कौन हरै भव बाधाजी, सब जग देखा छान ॥ ३ ॥
दासनैनसुख कछु नहिं मांगत, जीदीजिये शिवपुरथान ॥ ४ ॥

६९—रागनी जङ्गला झंझोटी मारवा दादरा ।

किस विधि कीने करम चकचूर, थारी परम छिमापै जी अचंभा मोहि आवै प्रभु, किस विधि० ॥ टेक ॥ एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, वस्त्र शस्त्र नहिं पास हजूर। दूजे जीव दया के सागर, तीजे संतोषी भरपूर ॥ १ ॥ चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर। कोमल सरल वचन सतवक्ता, निर्लोभी संजम तपसूर ॥ २ ॥ त्यागी बैरागी तुम साहिब, आकिंचन व्रत धारी भूर। कैसे सहस्र अठारह दूषण, तजिकैं जीतो काम करूर ॥ ३ ॥ कैसे ज्ञानावरन निवारो, कैसे गेरो अदर्शन चूर। कैसे मोहमल्ल तुम जीतो, अन्तराय कैसे कियो निमू र ॥ ४ ॥ कैसे केवल ज्ञान उपायो, कैसे किये चारूं घाती दूर। सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, फिर भी नहिं प्रभु तुमकूं गरूर ॥ ५ ॥ करत आस अरदास नयनसुख, दीजे यह मोहि दान ज़रूर। जनम जनम पद पङ्कज सेऊं, और न कछु चित चाह हजूर ॥ ६ ॥

(७०)

जिस विध कीने करम चकचूर—सोई विधि बतलाऊं-तेरा भरम मिटाऊं वीरा जिस विधि कीने करम चकचूर—टेक— सुनो संत अरहंत पंथजन—स्वपर दया जिसघट भरपूर—त्याग प्रपंचनिरीह करैं तप—ते नर जीतैं कर्म्म करूर ॥ १ ॥ तोड़े क्रोध

निठुरता अघमग—कपट कू ग सिर डारी धूर—असत्त भीक भंग बतावैं—तिनर जातें करम करूर ॥२॥ लोभ कन्दरा के मुखमें भर काट असंजम लाय ज़रूर—विषय कुशील कुलाचल फूंकैं—ते नर जीतें करम करूर ॥ ३ ॥ परम क्षिमा मृदुभाव प्रकाशैं—शरल बृत्ति निर्वांछ कपूर—धरसंजम तप त्याग जगत सब—ध्यावैं सत्चित केवलनूर ॥ ४ ॥ यह शिवपंथ सनातन संतो—सादि अनादि अटल मशहूर— या मारग नयनानन्द पायो-- इस विधि जीते करम करूर ॥ ५ ॥

७१—रागदेश ।

राजरी मूरत प्यारी लागै छै, म्हानैं राजरी मूरत० ॥ टेक ॥
नाम मन्त्र परताप राजरे, पाप भुजङ्गम भागै छै ॥ १ ॥
बचन सुनत तन मन सब हुलसै, ज्ञान कला उर जागै छै ॥ २ ॥
ज्यों शशि निरखि कमोदिनि विकसै, चित चकोर पद पागै छै ॥
दृग सुख ज्यों घन विरखि मगन है, मन मयूर अनुरागै छै ॥ ४

७२—रागनीटथोड़ी—पंचपरमेष्ठी स्तुति ।

जै जै जै जिन सिद्ध अचारज, उज्झाय साधव शिवकंत ॥ टेक
जै कल्याण धाम जग तीरथ, पोषक सकल चराचर जंत ।
पूजत नित पङ्कज तुमरे नर, नारायण अरु ब्रह्मा संत ॥ १ ॥
शूकरसिंह नवल मर्कट के, सुनो सकल हमने विरतन्त ।
ऐसे अधमं उधारे तुमनैं, अरु कीने तिनकूं अरहन्त ॥ २ ॥
नाग बाघ दंडक स्वानादिक, भील मेकस जीव अनन्त ।
कर उद्धार पार किये जग से, जिन पूजे तुमकूं भगवन्त ॥ ३ ॥
राव रङ्क सेवक अरु शत्रु, निगुण गुणी निर्धन धनवन्त ।

ावको अभयदान तुम बांटो, जो भव के भय से भयवन्त ॥ ४ ॥
: व्याकरण विषय तुम साखा, अर्हं इति पूजाया सन्त ।
ब्द अखण्डित पूजा मंडित, पंडित जन मानो सब भन्त ॥ ५ ॥
ीतराग सर्वज्ञ भये तुम, तारण तरण स्वभाव धरन्त ।
ीरथ परम परम पुरुषोत्तम, परम गुरू सब सृष्टि कहन्त ॥ ६ ॥
ाते जल चन्दन हम अरचैं, अक्षत पुष्परु चरु दीपन्त ।
ूप महाफल सैं तुम पूजा, है त्रिकाल त्रिभुवन जैवन्त ॥ ७ ॥
ाब पर दया सभी के साहिब, दास नैनसुख पम भणन्त ।
र उत्कृष्ट भृष्ट मत राखो, बेग करो भव बाधा अन्त ॥ ८ ॥

७३—रागनी टयौड़ी

राज की सोच न काज की सोच न, सोच नहीं प्रभु नर्कगये ी ॥ टेक ॥ स्वर्ग छुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं तिरजंच ाये की। जन्म मरण को सोच नहीं है, साच नहीं कुलनीच ाये की ॥ १ ॥ ताडन तापनकी सोच नहीं है, सोच नहीं तन गिनि दहे की। साल छिदे की सोच नहीं है सोच नहीं व्रतभंग कये की ॥ २ ॥ ज्ञानलुटे की सोच नहीं है सोच नहीं दुर्ध्यान ाये की। नयनानंद इक सोच भई अब, जिन पद भक्ति विसार ेये की ॥ ३ ॥

७४—राग भैरवी तथा खम्माच की ठुमरी।

डूबी पड़ी भवसागर में, मोरी नय्याकूं पार उतारो महा-ाज ॥ टेक ॥ बीतो है अनंत काल, डूबो जन्म के ज़वाल। ेके अवलम्ब, तिस्तारो महाराज ॥ १ ॥ लोभ चक्र माँहि पीर,

क्रोध मान माया भरी। राग द्वेष मच्छ से उबारो महाराज ॥ २ ॥ तारे धरमी अनेक, पापी हू उतारो एक। वीतराग नाम है तिहारो महाराज ॥ ३ ॥ कहैं दास नैनसुक्ख, मेटो मेरा भव दुक्ख, खेंचिके कुघाट से निकारो महाराज ॥ ४ ॥

७५—राग सारंग।

कर्मनिकी गति टारो स्वामी, कर्मनिकी गति टार ॥ टेक ॥
कर्मनि तें मैं संकट पाये, गया नर्क बहु बार ॥ १ ॥
कबहुँक पशु पर जाय धरा तहां, दुख पाये लद भार ॥ २ ॥
देव मनुष गति इष्ट वियोगी, दुख को वार न पार ॥ ३ ॥
आयो वीतराग लखि तुमकूं, राखो चरण मझार ॥ ४ ॥
नैनसुक्ख की अरज यही है, भवसागर से तार ॥ ५ ॥

७६—राग खम्माच-जंगला ग़ज़ल।

सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगर बरसैं रतन ॥ टेक ॥
लीनो है आज ऋषभ अवतार, नाभिराय घर हरष अपार।
रतन जु बरसैं पंच प्रकार, शीतल पवन सुधाकी भरन ॥ १ ॥
पुष्प वृष्टि दुंदुभि जयकार, बटत बधाई घर घर बार।
आज अजुध्या नगर मझार, पूजत इंद्र प्रभू के चरन ॥ २ ॥
सबज़ हुआ उंगल गुलज़ार, बन उपबन फूले इकबार।
कामिनि गावैं मंगलचार, बोलत पिक दिलचस्प बचन ॥ ३ ॥
चंदन से चरचे घर बार, लटकाये लखि बंदनवार।
है प्रभो हम सुख को दातार, लीजे प्रभू का चरनें शरन ॥ ४ ॥

७७—राग ख्यौडी ।

ादि पुरुष तेरी शरणगही अब, टूटी सी नाव समुद्रबिचबेड़ा ॥टेक॥
ाभि पिता मरु देवी के नंदन, इस अवसर कोई नहीं मेरा ।
गम उदधिसैं पार लगावो, आन पहूँचा यहां काल लुटेरा ॥१॥
ातम गुणकी खेप लुटी सब, लूट लियो अनुभव धन मेरा ।
ीनवन्धु इस करम भंवर की, कठिन विपति में पड़ा थारा घेरा ॥२॥
यातो नय्या उलटी हां फेरो, क्या अब पार करो यह बेड़ा ।
ैनानंद की अरज़ यही है, नातर विरद लजावै तेरो ॥ ३ ॥

७८-राग जंगलेकी लावनी वा ठुमरी (बधाई) ।

नाभि घरले चलरी आली, जहां जन्मे आदिजिनंद किया ान् बिजय खाली ॥ टेक ॥ ऐरावत गज साज सुरग में, सुर ेना चाली । फूलन के गजरा गुंदलाये, बागन के माली ॥ १ ॥ द बृद्ध जय जयधुनि टेरैं, मोर मुकट वाली । झनन झनन दृग गन करत सुर दे देकर ताली ॥ २ ॥ गंधोदक की बृष्टि रतनकी ारा सुरढाली । शीतल मंद सुगंध पवन अब चारों दिश ाली ॥ ३ ॥ जल चंदन अक्षत सुरलाये, फूलन की डाली । रु दीपक शुभ धूप फलादिक, भर भर कर थाली ॥ ४ ॥ सुफल यो अब जन्म हमारो, चहुँ गति दुख टाली । नैनानंद भयो ांवजनकूं, लखि यह खुशहाली ॥ ५ ॥

७९-ठुमरी जंगला झंझोटीका जिला ।

ाभि कुँवरका देख दरश सब दूर भयो दिलका खटका ॥ टेक ॥
इंद्र बधू जिन मंगल गावैं, भेष किये नागर नट का ।
मेरु शिखर पर प्रथम इंद्रका, जिन उत्सवकं मन भटका ॥ १ ॥

पांडुक बन सिंहासन ऊपर, रतन माल मंडप लटका।
सुरगण ढालत क्षीरोदधि के, सहस अठोत्तर भर मटका ॥ २ ॥
तांडव नृत्य कियो सुरराई, सकल अंग मटका मटका।
सुर किन्नर जहां बीन बजावैं, कर कंकण झटका झटका ॥ ३ ॥
कुगुरु कुदेव कुलिंगी दुर्जन, देखनकूं भी नहिं फटका।
धर्मचोर पापी दुखदाई, देश त्याग हां सैं सटका ॥ ४ ॥
पुन्य भंडार भरे भविजीवन, सरन लह्यो प्रभु पद पटका।
सरधावंत भये मिथ्याती, पाप भार सिर से पटका ॥ ५ ॥
आज दिवस कूं दास नैन सुख, फिरताथा भटका भटका।
दीनबंधु अब वही दिवस है, देहु पुन्य हमरे बटका ॥ ६ ॥

८०— ठुमरी जंगला।

लिया आज प्रभुजी ने जनम सखी चलो अवधपुरी गुण गावन कूं ॥ टेक ॥ तुम सुनोगी सुहागन भाग भरी, चलो मोतियन चौक पुरावन को ॥ १ ॥ सुवरण कलश धरो शिर ऊपर, जल लावें प्रभु न्हावन को ॥२॥ भर भर थाल दरब के लेकर, चालो री अर्घ चढ़ावन को ॥ ३ ॥ नयनानंद कहैं सुनि सजनी, फेर न अवसर आवन को ॥ ४ ॥

८१— रागभैरवी।

तुम हमैं उतारो पार अजित जिन भवदधि बांह पकर के जी ॥ टेक ॥ हमकूं अष्ट कर्म वैरी नें लीने बांध अकर कैं जी। हम न चलेंगे उनके संग, रहैं तेरे द्वार पसर कैं जी ॥ १ ॥ अष्ट दरब ले पूजन आये, लेंगे दान झगर कैं जी। भावैं दया निमित शिव

ोजो, भावैं दीजो अकर कैं जी ॥ २ ॥ जिन जिन तुमको पूजे याये, भजि गये कर्म सुकदि कैं जी । हम सुख के भव बंधन ोड़ो, सूर है नाहिं मुकरि कैं जी । ॥ ३ ॥

८२-रागधनाश्री ।

हमकूं पदम प्रभु शरण तिहारी जी ॥ टेक ॥ पदमा जिनेश्वर ादमा दायक, घायक हो भव के दुख भारी जी ॥ १ ॥ तुम सों (व न जग में दूजो, अरु हमसे दुखिया संसारी जी ॥ २ ॥ अपने भाव वकस मोहि दीजे, यह तुमसे अरदास हमारी जी । ३ ॥ नैनसुक्ख प्रभु तुमरी सेवा, भवदधि पार उतारनहारी जी ॥ ४ ॥

८३-रागनी टयौडी ।

हमकूं आप करो अपनी सम, पारस लखि अरदास करी है ॥ टेक ॥ नाम प्रभाव कुधात कनकहो, महिमा अगम अनंत भरी है । सकल सृष्टि उत्कृष्ट संपदा, तुम पद पंकज आय परी है ॥ १ ॥ जे तुम पद पद्माकर सेवैं, तिनतें भव आताप डरी है । जनम मरण दुख शोक विनाशन, ऐसी तुम पै परम जरी है ॥ २ ॥ कहत नैनसुख हमरी नय्या, इस भव भँवर मँझार पड़ी है ।

८४-होली अध्यात्म राजमती की-रागनीकाफ़ी ।

होरी खेलत राजमतीरी । हे सतीरी-होरी खेलत राजमतीरी ॥ टेक ॥ संजमरूप बसंत धरो सिर, तजि भव भोग सतीरी । श्रीगिरनारि विजय वन कुंजन, कर्मन संग लरी री-कंत जाके

भये हैं जती री ॥ १ ॥ भरि संतोष कुंड रंग सोहं, टेर पंच समिती री। रत्नत्रय व्रतधारि कोतूहल, आतमसूं करती री, स्वांग जगसूं डरती री ॥ २ ॥ रोके है आस्रव जन मतवारे, संवर डफ धरती री। तीन गुप्ति की ताल बजावत-भवसागर तरती री ॥ मानको मद हरती री ॥ ३ ॥ कर्म निर्जरा बजत मजीरा, शिव पथ गति भरती री। दृग सुख धारि सन्यास छिनक में, पाई है देव गती री। स्वर्ग अच्युत में सती री ॥ ४ ॥

८५—राग काफी।

चल खेलिये होरी नेमि वैरागी भयोरी ॥ टेक ॥ केवल ज्ञान क्षीर सागर से, भाजन मन भरलो री। तामें पंच समिति की केशर घस बस रंग करो री-ध्यान के ख्याल लगो री ॥ १ ॥ समकित की पिचकारी ले ले, गुप्त सखी संग लो री। भव्य भाव शुभ हेरि हेरि कें, निज निज बसन रंगोरी—धरम सबही को सगोरी ॥ २ ॥ सप्त तत्व के लिये कुमकुमे, नव पदार्थ भर झोरी। भिन्न भिन्न भविजन पर फेंको, तृष्णामान हनोरी-वेग बनबास बसो री ॥ ३ ॥ मोह दंड होरी का फूंको, जातें दुख न भरो री। पंचमगति की राह यही है, आरत चित बिसरो री-नैनसुख जोग धरो री ॥ ४ ॥

८६—राग कान्हड़ा तथा काफी।

अरी परी मैं तो आज बसंत मनायो, पिया ज्ञान कान्हग्रर आयो सखी री मैं तो आज बसंत मनायो ॥ टेक ॥ कुबज्ञा कुमति दसोटा दीनो, सुमति सुहाग बढ़ायो। शील चुनरिया प्रमुख

अभूषण, सहस अठारह लायो ॥ १ ॥ छिमा महावर हित मिल महँदी, सरल सुगंध रचायो। चुरला सत्य शौच भुज भूषण, संजम शील गुंदायो ॥ २ ॥ तप दुलड़ी नथ त्याग अकिंचन, व्रत लटकन लटकायो। गुणगण गोप गुलाल करमरज, घट बृज मांहि उड़ायो ॥ ३ ॥ भर पिचकारी भाव दयारस, पिया संग फाग मचायो। राधे सुमति निरखि पिव नैनन, आनंद उर न समायो ॥ ४ ॥

८७–पद उपदेशी–राग धमाल होली की चाल में।

अरे करले सफल जनम अपना, अब करले, अब करले सफल० ॥ टेक ॥ करले देव धरम गुरु पूजा, जीवन है निशिका सुपना ॥ १ ॥ विषयन में मति जन्म गमावै, यह है शठ भुसका तपना ॥ २ ॥ दान शील तप भावन भाले, तन जोबन सब है खपना ॥ ३ ॥ हग सुख पर उपगार बिना सब झूंठी है जग की थपना ॥ ४ ॥

८८–रागकाफ़ी।

ऐसो नर भव पाय गँवायो। हे गँवायो–ऐसो नर भव ॥ टेक ॥ धन कूं पाय दान नहिं दीनो, चारित चित नहिं लायो श्री जिनदेव की सेव न कीनो, मानुष जन्म लजायो–जगत में आयो न आयो ॥ १ ॥ विषय कषाय बढ़ी प्रति दिन दिन, आतम बल सु घटायो। तजि सतसंग भयो तु कुसंगी, मोक्ष कपाट लगायो नरक को राज कमायो ॥ २ ॥ रजक श्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नहिं मनायो। त्रिभुवन पति होय भयो है

भिखारी, यह अग्निरज मोहि आयो—कहातैं कनक फल खायो ॥ ३ ॥ कंद मूल मद मांस भखन कूं, नित प्रति चित्त लुभायो। श्रीजिन बचन सुधा सम तजि कैं, नयनानंद पछतायो श्री जिन गुण नहीं गायो ॥ ४ ॥

८९—राग धनाश्री तथा देश भैरवी।

अब तू निज घर आव, बिकल मन अब तू निज घर आव ॥ टेक ॥
विकलप त्याग सुनूं जिन शासन, मत चीरत घबराव।
पावैगा निधि तुमरी तुमकूं, श्रीजिन धर्म पसाव ॥ १ ॥
गति इंद्री अरु काय जोग पुनि, जानो वेद कषाय।
ज्ञान भेद अरु संजम दर्शन, लेश्या भव्य सुभाव ॥ २ ॥
समकित सैनी और अहारक, चौदह मारग नाव।
नाम थापना दरब भाव करि, तत्व दरब दरसाव ॥ ३ ॥
यों जगरूप बिचारि शुभाशुभ, करिकरि थिरता भाव।
हरैं करम प्रगटै नयनानंद, भाषो सुगुरु उपाव ॥ ४ ॥

९०—राग धनाश्री तथा देश भैरवी।

क्यों तुम कृपण भये, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भये ॥ टेक ॥
घट में ज्ञान निधान तुम्हारे, सो क्यों दाब रहे।
भटकत विषय तुषन कूं डालत, नृप हो रंकथये ॥ १ ॥
विपत काल मैं धन सब खाव्वत, ले ले करज नये।
तुम धनवंत होय दुख पावो, मूरख भाव ठये ॥ २ ॥
कबहुँक शूकर कूकर उपजत, कबहुँक बैल भये।
पिटत पिटत नर्कनि के माहीं, बालन एक रहे ॥ ३ ॥

दान शील तप भावन भाकर, संजम क्यों न लहे।
जाते नैन सुख्य तुम पाते, जाते करम दहे ॥ ४ ॥

६१—राग ठेठ बरवा ठुमरी उपदेशी।

जिया न लगावैरे, देख कैं पराई माया ॥ टेक ॥ पुत्र कलत्र पराई संपति, इन संग मतना ठगावैना ठगावैरे ॥ १ ॥ पुद्गल भिन्न भिन्न तुम चेतन, अंत न संग निभावै न निभावैरे ॥ २ ॥ मतकर विषै भोग की आशा, मत विष बेलि बढ़ावैरे बढ़ावैरे ॥३॥ नयनानंद जे मूरख प्राणी, सोवत करम जगावैरे जगावैरे ॥ ४ ॥

६२—राग धनाश्री।

तजि पुद्गल को संग, अज्ञानी जिया, तजि पुद्गल को संग ॥ टेक ॥ तुम पोषत यह दोष करत है, पय पिय जेम भुजंग। बड़वानल सम भूरि भयानक, घायक आतम अंग ॥ १ ॥ यासंग पंचपाप में लिपटो, भ्रमतो कुगति कुढंग-परिवर्तन के दुख बहुपाये, याही के परसंग ॥ २ ॥ शीकर स्वातिसंग सागर के होवत वारि विहंग। भूपनको भूषणकी संगति, ठानत आदर भंग ॥ ३ ॥ अजहू चेत भई सो भई है, रेमद मत्त मतंग। नयन सुख्य सतगुरु करुणानिधि, बकसत विभव अभंग ॥ ४ ॥

६३—रागनी बरवा ठुमरी।

सर्बकरनी दयाबिन थोथीरे ॥ टेक ॥ जीवदयाविन करनी निरफल, निष्फल तेरी पोथीरे ॥ १ ॥ चंद बिना जैसे निष्फल, रजनी, आब बिना जैसे मोतीरे ॥ २ ॥ नीर बिना जैसे सरवर

निरफल, ज्ञान बिना जिय ज्योतीरे ॥ ३ ॥ छाया हीन तरोवर को छवि, नैनानंद नहिं होतीरे ॥ ४ ॥

६४—राग देश ।

मुक्तिकी आशा लगी, अरुभ्रमकूं आना नहीं ॥ टेक ॥

घर छोड़ के जोगी हुवा, अनुभावकूं ठाना नहीं ।
जिन धर्मकूं अपना सगा अज्ञान ते माना नहीं ॥ १ ॥

जाहिर में तू त्यागी हुवा, बातिन तेरा छाना नहीं ।
ऐ यार अपनी भूल में, विषबेल फल खाना नहीं ॥ २ ॥

संसार कूं त्यागे बिना, निर्वाण पद पाना नहीं ।
संतोष बिन अब नैनसुख, तुमकूं मज़ा आना नहीं ॥ ३ ॥

६५—राग सारङ्ग ।

न कर करम की तू आसरे, अरेजिया न कर करमकी तू आसरे ॥टेक

अंतराय भई प्रथम जिनेश्वर, जाके सुरपति दासरे ।
दरव क्षेत्र अरुकाल भाव लखि, तजि विधि को विसवासरे ॥ १ ।

छहो खंडको नाथ भरथ नृप, मान गलत भयो तासरे ।
सीता सती इंद्र करि पूजित, भयो बिजन बन वासरे ॥ २

खगधर वंश तिलक नृप रावण, करमनतैं भयो नाशरे ।
तीर्थंकरकूं होत परिषह, करम बड़े दुख वासरे ॥ ३ ॥

आशा करत करम सरसावत, ज्यों पय पीवत स्वासरे ।
नैन सुख्य चिरकाल भयो अब, काढ़ो गलकी फांसरे ॥ ४ ॥

९६—लावनी राग जंगला गारा ।

क्यों परमादी हुवा वे तुझकूं बीता काल अनंता ॥ टेक ॥
आयो निकस निगोद सेरे. भटको थावर योनि ।
मिथ्या दर्शनते तन धारे, भूजल पावक पौन ॥ १ ॥
धारी काया काष्ठ कीरे दहन पचन के हेत ।
सूक्ष्म और थूल तन धारो, अजहू न करता चेत ॥ २ ॥
बिकल त्रय में भरमतारे, भयो असैनी अंग ।
सैनी ह्वै हिंसा में राचो, पी लई मिथ्या भंग ॥ ३ ॥
सुर नर नारक जोंनि मेरे, इष्ट अनिष्ट संयोग ।
दर्शन ज्ञान चरण धर भाई, नैनानंद मनोग ॥ ४ ॥

९७—राग बरवा-परस्त्री निषेध का पद ।

यह तो काली नागनी रे, जीया तजो पराई नार ॥ टेक ॥
नारा नहिं यह नागनी रे, यह है विष की बेल ।
नागिनी काटै क्रोधसों रे, यह मारे हँस खेल ॥ १ ॥
बातें करतो और सोंरे, मन में राखै और ।
वा कूं मिले और कूं चाहै, वा कूं तजि कैं और ॥ २ ॥
नैन मिलाये मनकूं बांधै अंग मिलाये कर्म ।
धोखा देकर दुःख में डारै, याहि न आवे शर्म ॥३॥
तीर्थंकर से याकूं त्यागैं, जो त्रिभुवन के राय ।
नैनानंद नरक की नगरी, सत गुरु दई बताय ॥ ४ ॥

९८—राग बिहाग तथा खम्माच खास ।

अरे जिया जीव दया से तिरैगा, दया बिन धर धर जन्म मरैगा ॥ टेक ॥ पर सिर काट शीस निज चाहत रे शठ तापत

अगिनि जरगा ॥ १ ॥ दौष लगाय पोष निज खाई, जीभ छिदै अरुनर्क परैगा ॥ २ ॥ छलकर पर धन हरण चितारै, दिन दिन नमक समान गरैगा ॥ ३ ॥ सेय कुसील विषै विष पोषत, अहि मुख अमृत नाहिं भरैगा ॥ ४ ॥ बहु आरंभ परिग्रह के बस, पड़ि कर नर्क निगोद सरेगा ॥ ५ ॥ पपण पाप त्यागि नयनानंद, धर्म भवांवुधि पार करैगा ॥ ६ ॥

९९—ठुमरी पीलू की राग कजरी पूर्वी।

भजन बिन काया तेरी योंही रे चली ॥ टेक ॥ बालापन तेरा गया रे खेल में, भोगत विषय को यह जवानी रे ढली ॥ १ ॥ लागि रहो गृह काज विषै नित, कीने अघ भारी पर नारी रे छली ॥ २ ॥ वृद्ध भयो तन कांपन लागा, करि कुबरानी तेरो ग्रीवा रे हली ॥ ३ ॥ नयनानंद तजो जग आशा, मानो सतगुरु की यह शिक्षा रे भली ॥ ४ ॥

१००—राग ठुमरी बरवा पीलूवा बिहाग खास।

नहिं कियो भजन जिया बीतो काल अपारे ॥ टेक ॥

निकसि निगोद लो त्रस थावर, भू जल अगिनि बयारे ॥१॥

सूक्षम थूल तरोवर उपजो, कृमि पिपील भृंगारे ॥२॥

पंचेंद्री भयो समन अमन तन, किये पाप अधिकारे ॥३॥

जूवा खेल मांस मद चाखे, कुविषन सप्त प्रकारे ॥४॥

अब अघ तजि भजि परमातम पद, जो त्रिभुवन में सारे ॥५॥

नैन सुख्य भगवन्त भजन बिन, कब उतरोगे पारे ॥६॥

१०१—रागठुमरी बरवापीलू।

थिर रहै न जग में, मतना जीव विध्वंशै ॥ टेक ॥
जीव सताये नष्ट होत है, राज तेज अहदंशै ॥ १ ॥
जीव दुखाय नष्ट भये जादव, दंडक भये विध्वंशै ॥ २ ॥
ब्रह्म सताये गये नरक में, रावण कौरव कंशै ॥ ३ ॥
दयावंत उन्नत पद पावैं, तीर्थंकर अवतंशै ॥ ४ ॥
नयनानंद दया तैं शिव पद, पावैं संत प्रसंशै ॥ ५ ॥

१०२—राग मांड देश की ठुमरी।

सुनरे गंवार, नितकं लवार, तेरे घट मझार, परगट दिदार। मत फिरै ख्वार, उरझा को सुरझाले। सुनरे गंवार० ॥ टेक ॥ तजिमन विकार, अनुभवकूं धार, कर बार बार, निज पर विचार—तू है समय सार अपने ही गुण गाले ॥ १ ॥ तूही भव सरूप, तूही शिव सरूप, होके ब्रह्म रूप, पड़ा नर्क कूप, विषयन के तूप संता मन को हटाले ॥ २ ॥ कहैं दास नैन, आनंद दैन, सुन जैन बैन, जासूं होय चैन—तजि मोह सैन—नरभो फल पाले ॥ ३ ॥

१०३—रागखास बरवे की ठुमरी।

सुन सुनरे मन मेरी बतियां, अब कुछ करो ना भलाई जग मैं रे। सुन सुनरे ॥ टेक ॥ मन समता न बचन मृदु बोलै, कपट बसे तेरा रगरग मैंरे ॥ १ ॥ बोलत झूंठ लोभ के कारण, रीत गही जुकही ठग मैंरे ॥ २ ॥ नेम न तप न दान मन भावत,

ढूंढत संपति पग पग मैरे ॥ ३। भजन समाधि न भाव शील के भग सें भागिबे भग मैरे ॥ ४ ॥ किहि बिधि सुख उपजै सुनि बीरण, कंटक क्रूर बोये मग मैरे ॥ ५ ॥ दृग सुख धरम लखन जिन बिसरो, अंतर कौन मनुष्य खग मैरे ॥ ६ ॥

१०४ राग जोगिया आसावरी ।

पापनि से नित डरिये, अरे मन पापन से नित डरिये ॥ टेक ॥
हिंसा झूंठ बचन अरु चोरी, परनारी नहिं हरिये ।
निज परकूं दुख दायनि डायन, तृष्णाबेग बिसरिये ॥ १ ॥
जासें परभव बिगड़ै बीरण, ऐसो काज न करिये ।
क्यों मधु बिंदु विषय के कारण, अंध कूप में परिये ॥ २ ॥
गुरु उपदेश बिमान बैठ के, यहां तें बेग निकरिये ।
नयनानंद अचल पद पावैं, भव सागर सूं तरिये ॥ ३ ॥

१०५—रागनी जोगिया आसावरी में ।

है वोही हितू हमारे, जो हमकूं डूबत जग से निकारै ॥ टेक ॥
सांचो पंथ हमें बतलावै, सांचे बैन उचारै ।
राग दोष ते मत नहिं पाषै, स्वपर सुहित चित धारै ॥ १ ॥
हम दुखिया दुख मेटन आये, जनम मरण के हारे ।
जो कोई हमकूं कुमति सिखावै, सोई शत्रु हमारे ॥ २ ॥
कोटि ग्रंथ का सार यही है, पुण्य स्वपर उपगारे ।
दृग सुख जे पर अहित बिचारें, ते पापी हत्यारे ॥ ३ ॥

१०६—राग देशवा सोरठ ।

म्हारी सरधा में भंग परो, सरधा में भंग परो । हे जिन तू [illegible] परो । म्हारी सर्धा में भंग परो ॥ टेक ॥ कार्दो [illegible]

गिनी हम अपनी, मद जोवन से भरो। हे कुदेवों को संग करो ॥ १ ॥ दरब करम की ममता नल में, आपही आप जरो-हे कुलिंगी को स्वांग भरो ॥ २ ॥ भाव करम नो कर्म जुदे हैं, मैं चैतन्य खरो-हे कुज्ञानी के पंथ परो ॥ ३ ॥ ज्यों तिल तेल मैल सुवरण में, दधि में घीव भरो—हे अनादि को जोग जुरो ॥ ४ ॥ मुकति भये बड़भाग नैनसुख, तेलखि तेल परो—हे जड़ाजड़ भिन्न करो ॥ ५ ॥

१०७—दया की महिमा-मरहटी लंगड़ी रङ्गत जिसके ४ चौक हैं।

बंधे हैं अपनी भूल से भाई, बंधे बंधे मरजावेंगे, दया जीव की करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ टेक ॥ दया से परजा कहैगी राजा, दया से संत कहावेंगे। दया के कारण, सेठ अरु साहूकार बतावेंगे ॥ जे दुखिया की मदद करेंगे, इस जग में जस पावेंगे। विपत काल में, वही फिर मदद हमें पहुँचावेंगे ॥ धन जोवन के मद में हम तुम, जिसका जीव दुखावेंगे। पुण्य गिरैगा, तो वे फिर छाती पर चढ़ आवेंगे ॥ छेदें अरु भेदेंगे तनकूं, काढ़ कलेजा खावेंगे। दया जीव की, करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ १ ॥ झूंठ बचन से मान घटैगा, अरु जिसके ढिंग आवेंगे। सत्य बचन भी, कहेंगे तो सब झूंठ बतावेंगे ॥ बसु राजा की तरह झूंठ से नरक कुण्ड में आवेंगे। सत्यघोष की, तरह फिर राजदण्ड भी पावेंगे ॥ चोरी के कारण से प्राणी, कुल कलङ्क लग आवेंगे। रावण की ज्यों, वंश अरु बेलिनाश होजावेंगे ॥ फिर नरकों में उसके मुख को कूंचा बाल जलावेंगे। दया जीव की, करेंगे तो

हम भी सुख पावैंगे ॥ २ ॥ मैथुन व्यसन बुरा है प्राणी, जो इस मैं फँस जावैंगे । उन जीवों के, बीज अरु बंश नष्ट हो जावैंगे ॥ फिर उनके संतान न होगी, होगी तो मर जावैंगे । जो न मरैंगे तो उनके तन से रोग न जावैंगे ॥ नरकों में उनकूं लोहे के, थंभों से लटकावैंगे ॥ लोह की पुतली, गरम कर छाती से चिपकावैंगे ॥ हाहाकार करैगा जब वह, मुख में बांस चलावैंगे । दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ ३ ॥ जिनकै नहीं परिग्रह संख्या, तृष्णावन्त कहावैंगे । लोभ के कारण, झूंठ और चोरी में मन लावैंगे ॥ गुरुकूं मार देवकूं बेचैं, सभा से धर्म उठावैंगे । बाल बृद्ध के, कण्ठ में फांसी दुष्ट लगावैंगे ॥ राजा पकड़ धरै शूली पर, फेर नरक में जावैंगे । बचन अगोचर, नर्क के बहुत काल दुख पावैंगे ॥ कहैं नैनसुख दास दया से, सब सङ्कट कट जावैंगे । दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ ४ ॥

१०८—राग बिहाग की ठुमरी ।

देखो भूल हमारी, हम सङ्कट पाये ॥ टेक ॥

सिद्ध समान स्वरूप हमारा, डोलूं जेम भिखारी ॥ १ ॥

पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिग्रह धारी ॥ २ ॥

द्रव्य कर्म बस भाव कर्म कर, निजगल फांसी डारी ॥३॥

नो करमन ते मलिन कियो चित, बांधे बंधन भारी ॥४॥

बोये पेड़ बंबूल जिन्होंने, खावैं क्यों सहकारी ॥ ५ ॥

करम कमाये आगे आवै, भोगैं सब संसारी ॥ ६ ॥

नैन सुक्ख अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी ॥७॥

१०९—राग जंगला ।

कीना जी मैं कीना जग में, जैन बनज जसकारी जी ॥ टेक ॥
धर्म द्वीप दुर्गम्य दिशाकर, सतगुरु संग ब्यौपारी जी ।
केवल ज्ञान खान से लेकर, माल भरे हैं भारी जी ॥ १ ॥
कर्म काष्ठ के शकटा कीने, द्विविध धरम विष भारी जी ।
भक्ति आर से हांक चलाये, आगम लड़क मंझारी जी ॥ २ ॥
सप्त तत्व अरु नव पदार्थ भरि, तीन गुप्त मणि भारी जी ।
भवि जहुरी बिन कौन खरीदै, खेप अमोलक म्हारी जी ॥ ३ ॥
मिथ्या देश उलंघ जतन से, भव समुद्र से पारी जी ।
नयनानन्द खेप गुरु जन संग, मुक्ति द्वीप में ढारी जी ॥ ४ ॥

११०—राग जंगले की ठुमरी ।

हथना पुर तीरथ परसन कूं, मेरा मन उमगा जैसे सजल घटा ॥ टेक
पूजत शांत प्रशांत भई मेरी, विषय अगन आताप लटा ॥ १ ॥
सुख अंकूर बढ़े उर अन्तर, अब सब दुख दुर्भिक्ष हटा ॥ २ ॥
धन यह भूमि जहां तीर्थङ्कर, धरि आतापन जोग डटा ॥ ३ ॥
नयनानन्द अनन्द भये अब, परसि तपोबन मञ्जु तटा ॥ ४ ॥

१११—राग बरवे की ठुमरी ।

यह तपोबन वह बन है री, जहां लिया श्रीजी ने जोग ॥ टेक ॥
चक्रवर्ति भये तीन जिनेश्वर, जानत हैं सब लोग री ॥ १ ॥
तृणवत तजि बनकूं गये प्रभु, त्याग सकल सुख भोग री ॥ २ ॥
गरभ जनम तप केवल ज्ञानमयो, वानीखिरी थी अमोघ री ॥ ३ ॥
बहुत जीव तिरे इस बन से, कट गये कर्म कुरोग री ॥ ४ ॥

शांति कुन्थ अरु मल्लि परसि के, मिटगये मेरे सब रोग री ॥ ५ ॥
नयनानन्द भयो बड़भागन, हथनापुर संजोग री ॥ ६ ॥

११२—ख्याल चौबंध राग जंगला।

तूतो कर ले श्री जी का न्हवन जानरा जल की।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो हो जाय हलकी ॥ टेक
अरे तैंने मल मल धोई देह खिडाये पानी।
नहीं किया श्रीजी का न्हवन अरे अज्ञानी ॥ १ ॥
अरे तैंने सपरश के वस भोगे भोग घनेरे।
नहीं भये तदपि संपूर्ण मनोरथ तेरे ॥ २ ॥
अरे तैंने ब्रह्मचर्य गजराज बेचि खर लीनो।
ले जगत कलङ्क चले दुर्गति कहा कीनो ॥ ३ ॥
अरे अजहूँ चेत अचेत ख़बर नहीं कल की।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११३—कलंगी छन्द।

तैंने रसना के बस पुद्गल सब चख लीने।
तैंने भून भुलस षट्कायकूं लक्कट दीने ॥ १ ॥
तैंने भाषी चीरण विकथा असत कहानी।
दुर्वचन से बीधे मरम सताने प्राणी ॥ २ ॥
तैंने चाखे नागर पान, जीभकूं छीली।
तेरी तदपि रही यह जीभ, थूक से गीली ॥ ३ ॥
अब करले भजन मेरे वीर, आशा तजि कल की।
तेरे सिर से पाप की पोट ज्यूं होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११४–कलंगी छंद ।

तूं तो टांक मास की डली को नाक बतावै ।
अरु बांध लांकसूं खड्ग कुंवांक धरावै ॥ १ ॥
उसकी तो तीन हैं फांक समझले मन में ।
हो जैसा तीन का आंक देख दर्पण में ॥ २ ॥
तैंतो इससे सूंघ लिये पुद्गल जग के सारे ।
नहीं गई सिणक रही भिणक समझले प्यारे ॥ ३ ॥
अब प्रभु की सेवा करो तजो पुद्गल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११५–कलंगी छंद ।

तैने आंखों में अञ्जन बार अनन्ती डारे ।
लिये तीन लोक के आंज पदारथ सारे ॥ १ ॥
लिये निरख जन्म अरु मरण अनन्ती बारे ।
सब जानत हैं पर मानत क्यों नहीं प्यारे ॥ २ ॥
तू तो धोवत अपनी सौ बर आंख अज्ञानी ।
बहुतेरे रिताए कूप खिडाये पानी ॥ ३ ॥
कर दर्श प्रभू जी का दृष्टि हटै तेरी छल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११६–कलंगी छंद ।

तैने कानों से सुनलई जगत की अखत कहानी ।
नहिं सका तदपि सुन छैल मैल का पानी ॥ १ ॥

तू तो सुन रहा निशदिन हरदम मौत बिरानी ।
तेरे सिर पर खेल रहा काल क्या यह नहीं जानी
अब करले प्रभु जी का न्हवन सुनले जिन बानी ।
तेरी होजाय निर्मल देह यह फेर न आनी ॥ ३ ॥
कहै नैनसुक्ख अब तज दे बात छल बल की ।
तेरे सिर से पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११७—लावनी जंगले की ।

रावण से श्री रघुबीर कहैं निज मन की ।
तू जनक सुता दे लाय चाह नहिं धन की ॥ टेक ॥
अरे मेरा जो कोई करै बिगाड़ कटुक नहीं भाखूं ।
मैं औगुण पर गुण करूं बैर नहीं राखूं ॥ १ ॥
अरे मैं सतगुरु के मुख सुनी जैन की बानी ।
यह कलह जगत के बीच स्वपर दुख दानी ॥ २ ॥
अरे यह बिन कारण बहु जीव मरेंगे रण में ।
तू जनकसुता दे ल्याय जाऊं मैं बन में ॥ ३ ॥
अरे मुझे अनंत सम्पदा सिया बिन फीकी ।
तू लादे सीता सती कहत हूं नीकी ॥ ४ ॥
अरे वह मो जीवत दुख सहै पड़ी बस तेरे ।
अब तोकूं इतनो परो शोच मन मेरे ॥ ५ ॥
तब लङ्कपती यूं कहै सुनो रघुराई ।
जो लिखी हमारे कर्म मिटै न मिटाई ॥ ६ ॥
अब पछताये क्या होय जीव तूं तेरा ।
कहै नैनसुख्य रावण कूं काल ने घेरा ॥ ७ ॥

११८ - रागनी जोगिया असावरी की चाल में।

जिया तैने करी है कुमति संगयारी, मैं जानी बात तुम्हारी रे। टेक
हमसे तो तू टलता ही डोलै, उनसैं प्रीति करारीरे।
जो का ख्याङ होयगा तेरा, जो तोहि लागत प्यारी रे ॥ १ ॥

क्या तुम भूलगये उस दिनकूं, पड़े थे निगोद मंझारी।
एक स्वांस में जनम अठारा, पाते बेदन भारी रे ॥ २ ॥

अजहूँ हम तुमकूं समझावत, सुनरे पीव अनारी।
तजि परसङ्ग कुमति सौतन की, नातर होगी ख्वारी रे ॥ ३ ॥

नयनानन्द चलो जब ह्यांसे, कीजो याद हमारी।
जो न करूं उपगार तुम्हारा, तो मोहि दीजो गारी रे ॥ ४ ॥

११९ रागनी खास देश की ठुमरी।

हम देखे जगत के साधु रे, कहीं साधु नज़र नहीं आते हैं। टेक
कोई अङ्ग भभूति रमाते हैं, कोई केश नखून बढ़ाते हैं।
कोई कन्द मूल फल खाते हैं, वे साध का नाम लजाते हैं ॥ १
कोई नाहक कान फड़ाते हैं, फिर घर घर अलख जगाते हैं।
कलि झूंठ जगत भरमाते हैं, गहि हाथ नरक लेजाते हैं ॥ २
घर छोड़ि विपन चले जाते हैं, मठ छाप धुजा बनवाते हैं।
वे पूजा भेट धराते हैं, सो बमन करी फिर खाते हैं ॥ ३
निर्ग्रन्थ गुरु नहीं पाते हैं, जो मारग मोक्ष बताते हैं।
नयनानन्द सीस नमाते हैं, हम उनके दास कहाते हैं ॥ ४

१२०—ठुमरी देश और माढ की।

प्रभु धन्य धन्य, जग मन्य मन्य, तुम हो प्रछन्न, हम लिये अन्य तुम सम न अन्य, जग जन हितकारी ॥टेक॥ सुनिये जिनेन्द्र, मैं हूं सुरसुरेन्द्र, ये हैं मम उपेन्द्र, ये हैं सुर गजेन्द्र, चालिये जिनेन्द्र, कीजै न्हवन त्यारी ॥१॥ हे जगत भान, किरपानिधान, मोहि लो पिछान, सौधर्म जान, सुरपति ईशान, ये हैं संग हमारी ॥ २ ॥ सन्मति कुमार, माहेन्द्र सार, अरु सुर अपार, चारों प्रकार, मैं तो ले कैलार, तोरी सेवा उर धारी ॥ ३ ॥ हे दीनबंधु, हे दयासिंधु, मैं महरचंद, तोहि बंदिबंदि, लूंगा उछंग—कीजै गज असवारी ॥ ४ ॥ नहीं करी देर, गये गिरि सुमेर, पांडुक बनेर, पांडुक सिलेर, लाय जाय घेर—ताको पूजा बिस्तारी ॥ ५ ॥ भरि क्षीर बारि, कलशा हज़ार, प्रभु सीस ढार, जिन गुण उचार, करि जै जैकार—अरु कीनी विधिसारी ॥६॥ कहि मिष्टबैन, हरिमात सैन, करि सुजस जैन, लगे गोदलैन, भई सुख्य नैन—मानो फूली फुलवारी ॥ ७ ॥

१२१- राग देश विहाग परज के जिल्ले की ठुमरी।

भजन से रख ध्यान प्राणी, भजन से रख ध्यान ॥ टेक ॥
भजन सैं इंद्रादि पद हों, चालत बैठ विमान।
भजन सैं होत हरि प्रति हरी बलि बलवान ॥ १ ॥
भजन से खट खंड नव निधि, होत भरत समान।
तिरै भवसागर तुरत, है पाप को अवसान ॥ २ ॥
नवल शूकर सिंह मर्कट, करि भजन सर्द्धान।
भये वृषभ सेनादिक जगत गुरु, भजन के परवान ॥ ३ ॥

भजन से भये पूज्य मुनिजन, गोतमादि महान ।
भजन ही से तिरे भील जटायु, मींडक स्वान ॥ ४ ॥
कहत नयनानंद जग में, भजन सम न निधान ।
भये भजन से अर्हंत सिद्ध, आचार्य गये निर्वान ॥ ५ ॥

ऋषभ जिन जन्म मंगल बधाई ।

१२२—रागनी भैरवी तथा खास धनाश्री ।

अवधिपुर आज कृतार्थ भयो, हे अवधिपुर आज० ॥ टेक ॥
तजि सरवारथ सिद्धि परमारथ, दायक देव चयो ।
नाभि नृपति मरु देवी के मंदिर, आ अवतार लयो ॥ १ ॥
रंक भये धनवंत जगत मैं, कृपण कलेश बह्यो ।
नर्कनि में नारक सुख पायो, मोपै न जाय कह्यो ॥ २ ॥
जो आनंद त्रिकाल चतुर्गति, भावी भूत भयो ।
सो आनंद नयन हम निरखो, आदि जिनेंद्र जयो ॥ ३ ॥

१२३—लावनी पीलू बरवा ।

चले सुरासुर सकल अवधिपुर, श्रीजिन जन्म न्हवन करनैं ॥टेक॥
हुकम सुधर्म सुरेंद्र चढ़ायो, अपने निकट कुवेर बुलायो । श्रीजिन जन्म वृतांत सुनायो, सकल संपदा सार, प्रभु पै वार लगी रौसी परनैं ॥ १ ॥ चले कलप वासी सब देवा, चले भुवन पति करने सेवा । ज्योतिष अरु व्यतंर वसुभेवा, चौबीस अरु चालीस दोय बत्तीस इंद्र चाले शर ने ॥ २ ॥ सेना सप्त विधि लाये, गज घोटक रथ पात्त सजाये । वृष गंधर्व

नृत्य को धाये, बन घन गगन मझार—हो जै जै कार सो महिमा को बरनैं ॥ ३ ॥ नागदत्त ऐरावत सुन्दर, सो सजि कैं ले प्रथम पुरंदर। गये अवधि नृप नाभि के मंदिर, माया निद्रा रचीहिरे प्रभु शची—लगी जब कर धरनैं ॥ ४ ॥ लोचन सहस सुरेंद्र बनाये, उमंगि नयन सुख धाये हृदय लिपटाय—लगै संस्तुति करनैं ॥ ५ ॥

१२४—ठुमरी पीलू बरवा ।

भयो सफल आज जनम हमरो, हैं जनम हमरो, तनमन हमरो ॥टे०
अब सुरेंद्र पद को फल पायो, आन कियो दर्शन तुमरो ॥ १ ॥
बिन तुम भक्ति वृथा था यह तन, जा मैं था अस्थि न चमरो ॥२॥
तुम सेवा ते सेवैं सुरगण, नातर कोई न दे दमरो ॥ ३ ॥
अब मैं अमर यथार्थ कहायो, करसी क्या दुर्जन जमरो ॥ ४ ॥
लेय जिनेंद्र सुरेंद्र चढो गज, चल्यो सुरगिरि पै अमरो ॥ ५ ॥
पढ़ियो दग सुखजिनगुण मंगल, हरियो भव भव को भमरो ॥ ६ ॥

१२५—रागनी गौड़ की पुर्वी ठुमरी ।

जनमे जिनेंद्र, आये सुरेंद्र, लेगये गिरेंद्र, पांडुक वनेंद्र,
थापे शिलेंद्र पीठेंद्र बिछायो । जन्मे जिनेंद्र० ॥ टेक ॥
तजि तजि विमान, सुर आनि आनि, दियो नभ समान,
मंडप व्हां तान, छवि निरखि परख अमर न मन भायो ॥ १ ॥
जामें लगे लाल, मोतियन की माल, गावैं देव बाल, जिन
गुण विशाल, लखि असम काल सुरपति फरमायो ॥ २ ॥
भो भो सुरेंद्र, भो भो उपेंद्र, भो भो धनेंद्र, सेवा ग्रह जिनेंद्र

जावो सूर्य चंद्र छीरो दधि जलावो ॥ ३ ॥ रचि असंख्यात, पैढ़ा विख्यात, सब एक साथ, पुलकंत गात हाथों हाथ कलश लाये कीजै स्वामी न्हावो ॥ ४ ॥ करि भुज हज़ार, पढ़ि मंत्रसार, सब कलश ढार, दिये एक ही बार—पड़ी धारा धध धध भई अखालो लगावो ॥ ५ ॥ या जिन प्रसंग, भई जैन गंग, प्रगटी अभंग, उछटी तरंग लई सुर न अंग-सोई गङ्गा नित ध्यावो ॥६॥ यह अति विचित्र, गङ्गा है मित्र सुनिर्कै चरित्र चित्त हो पवित्र, जित नित न भ्रमू दग सुख नहि पायो ॥ ७ ॥

१२६ रागनी जंगला ।

ले गये अवधिपुर प्रभु जी को सुर जय जय उच्चारैं । लेगये अ० । भजि जै जै उच्चारैं अत्रजारैं भरि अंजुलि अरघ उतारैं । बजत तान तुम, तननननन, सब इंद्र चँवर ढारैं । लगये० ॥टेक॥ बजी धूधूकिट, धूधूकिट, बजत मजीरा धुन झाझाझा, झाझाझा करै, सारंगी सितार धुन द्रुम द्रुम द्रुमक पखावज, मृदंग बाजै, भेरी बीणा बांसरी, तबल ढोल गाजै, गावैं लेले चकफेरी नाचैं नभ में सुरी, छम छननन नन, इतनी जितने तारे ॥ १ ॥ कोई कहै नंदावृद्धो, जीवो एजिनेंद्रचंद्र, कोई कहै जीवो राजा, नाभि नगरी को इंद्र, कोई कहै भ्राता जग, भ्राताका ए जीवो माता, जायो जिन मुकतो को, दाता लावे लाता पाय, लेअपै मगन, सन सन ननजन इन हमकूं निस्तारे ॥ २ ॥ ऐसी विधि करत उछाव गीत गावन तब, घेर लियो अङ्गल ज़मीन असमान सब, बल थल धन धन बाट बाट कुंअरोक, पूजै राम मंदिर बजावे शंख ढोक ढोक, छाये धाये लोकि के

गजेंद्र बंधन नननन नरचौक परेसारे ॥ ३ ॥ शचीनें उतार जिन राज गोद मांहि लिये, जापे खानें मांहि जाय माताकूं प्रणाम किये, कैसं जिन माता कूं जगावे मीत गावै गीत, कैसे इंद्र प्रभु के पिता से करै बात चीत, कहो नैनानंद थिरत्तंत तुम तन ननन ज्यों सुनैं संत सारे ॥ ४ ॥

१२७—चाल गंगावासी मेवाती।

लिया ऋषभ देव अवतार, किया सुरपति नै निरत आके-लिया ऋषभ० । अजी निरत किया आके, हर्षा के, प्रभूजी के नव भव को दरशाके, सरर सरर कर सारंगी तँबूरा, नाचै पोरी पोरी मट काकै ॥ टेक ॥ अजी प्रथम प्रकाशी वानै, इंद्रजाल विद्या ऐसी, आज लों जगत में सुनी न काहू देखी तैसी, आयो वह छबीला चटकीला यों मुकट बांध—छम देसो कूदो मानूं आकूदो पुनों का चांद, मनकूं हरत, गति भरत प्रभू को पूजे धरणी सों सिरन्या कै ॥ १ ॥ अजी भुजों पै चढ़ाये हैं हज़ारों देवी देव जिन—हाथों की हथेली पै जमाए हैं अखाड़े तिन ता धिन्ना ता धिन्ना—किट किट धित्ता उनकी प्यारी लागै घुम किट घुम किट बाजै तब्ला नाजै प्रभुजी के आगै सैनों में रिझावै—तिर्छी तिर्छी पड़ लगावै—उड़ जावै भजन गाकै ॥ २ ॥ अजी छिन मैं जा बंदै वह तो नंदीश्वर द्वीप आप पांचूं मेरु बंद आ मृदंग पै लगावै थाप—बंदै ढाई द्वीप तेरा द्वीप के सकल चैत्य—तीनों लोक मांहि पूज आवै बिंब नित्य नित्य-आवै झपटि सम्-हां पै दौड़ा लेने दम—करे छमछम—मन मोहे जी मुसकाके ॥ ३॥ अजी अमृत के लागै झड़, बरसी रतन धारा- सीरी सीरी बाजै

पौन—किए देव जै जै कारा, भर भर झारी, बरसावैं फूल देदे ताल महकै सुगंध चहकै मुचंग, षड़ताल, जन्मे जिनेंद्र, भयो नाभि के अनंद- नैनानंद यों सुरेंद्र गए भक्ति कूं बतला के ॥ ४ ॥

१२८—मल्हार ।

शुभ के बदरवा झुक आएरी-शुभंक हे झुकिआए झुकि आएरी ॥टे०
सखी अब नीके दिन आए-देखो जगत पुन्य घन धाए—१
सखि भविजन भाग बिजोए-अहमेंद्र चयो अघ धोए—२
उमली सर्वारथ सृष्टी-भई ऋषभ जनम की वृष्टी—३
सखि जमे हरष अंकुरे-अब फलें कलपतरु पूरे—४
घन फल दुर्भिक्ष हटायो-शिव फल को संवत आयो—५
अभिलाष अताप निवारी-चलै शीतल पवन पियारी—६
सखि बरसैं अमृत फुवारे-सुन जै जै कार उचारें—७
सुर पुष्प रतन बरसावैं-गंधर्व प्रभु के जस गावैं—८
चलो अवधिनगर सुखदाई-प्रभु तात को देन बधाई—९
आवो दर्शन प्रभु जी का करलो-नयनानंद लैं घर भरलो—१०

(१२६)

जुग जुग जीवो ऋषभ अवतार—तुम जुग जुग ।
तुम सकल जगत दुख हरण करन सुख, जुग जुग ॥ टेक ॥
एक तो प्रभु तुम करी तपस्या, दूजे तीर्थंकर अवतार ।
तीजे धर्म तीर्थ के कर्ता, मोक्ष पंथ दर्शावन हार ॥ १ ॥
चौथे स्वयं बुद्ध वृत धरिहो, करिहो भविजन को उद्धार ।
तिरकै मोक्ष वरोगे साहिब, फेर न आवोगे संसार ॥ २ ॥

सरन शरनी तुम हो साहिब, मैं सेवक तुमरा मकार।
राखो नाथ चरण में अपने, तुम भगवत मैं भक्त तुम्हार ॥३॥
तारे बहुत भव्यजन तुमने, हमसे अधम रहे मझधार।
अब कै नाथ हमें निस्तारो, तुमरा जन्म हमारी बार ॥ ४ ॥
नाचैं इन्द्र जिनेंद्र निहारैं, लेत बलय्यां भुजा पसार।
लख २ मुख हद सुख न समावे, अविलोकै कर नयन हज़ार ॥५॥

१३०—रागनी देशवा सोरठा।

छाये पुन्य जगत जन शुभ की घड़ी, शुभकी घड़ी है शुभ की घड़ी-छाये ॥ टेक ॥ जगो सुहाग भाग जग जनका-परजा सकल निहाल करी। जन्मे तीर्थंकर या भूपर-नर्कादिक में चैन परी ॥ १ ॥ चिरजीवो यह बालक जग में- जापै शिव त्रिय माँग भरी। जुग जुग जीवो तुम मात पित नित सूबस बसो यह अवधिपुरी ॥ २ ॥ घर घर पुष्प सुधारस बरसैं- लग रही पंचाश्चर्य झड़ी नयनानंद सुरेंद्र भगति लख-भवि जन सम्यक् दृष्टि धरी ॥ ३ ॥

(१३१)

सुनरे अज्ञान, दुकदे के कान अपनी समान, लख सबकी जान, दशप्राण किसी प्राणी के ना संहारे ॥ टेक ॥ मत काट पीट, सपरस कूं ढीठ, मतमा घँसीट, मतना उमेंट, मत रस अनिष्ठ, सींचै भींचै जारै मारै ॥ १ ॥ तु तो इष्ट मिष्ट खावे रस विशिष्ट, मोहि विष्य विष्ट लख हाल भ्रिष्ट, होकै बलिष्ट, रसना को न विदारै ॥ २ ॥ मत नाक तोड़, मत आंख फोड़,

ात कान मोड़, ये पांच खोड़, दुख दें कठोड़ कोसें जीव जन्तु
ारे ॥ ३ ॥ मन टूट जाय, सुध छूट जाय, बोला न जाय, झोला
। जाय, सब देत हाय, अरु भाखेंगे हत्यारे ॥ ४ ॥ ले हाय हंस,
ायो नष्ट कंस, रावण का बंश, भयो सब विध्वंस, कौरव समंस
ुर्गति में पधारे ॥ ५ ॥ मत रूंध स्वास, मूंद न उस्वास, है
ाही खास, जीवन की आस, मत करै नास, ये वर्सीले हैं सारे
। ६ ॥ दिन दोकी जोत, है सिर पै मौत, जब लग उद्योत, ले
ीत पोत, फिर रात होत, जीती बाजी मत हारे ॥ ७ ॥ सुन कर
ुमंत, चित कर प्रशांत, है यह ही तंत, जा बैठ अंत, दिग सुख
ागंत, मत अपने बिगारे ॥ ८ ॥

(१३२)

भज राम नाम-मत चाब चाम-दुनिया के नाम–आवै न काम धन धाम गाम-तेरे संग ना चलैंगे ॥ टेक ॥ रख छिमा भाव कोमल सुभाव छल मत चलाव–रख सत में चाव-लालच हटाव सब चरण में लगैंगे ॥ १ ॥ संजम कूं साध-तपकूं अराध-तज आधि-व्याधि-जग की उपाधि- कर दोष याद–हर कर्म गलैंगे ॥ २ ॥ नित पाल शील-मत करै ढील-खड़ो सीस झील-पर काल भील-तेरी फौज फील कूं-कुशील ये दलैंगे ॥ ३ ॥ यदि है अकील बनजा पिपील-मत कर दलील-मत बन रज़ील-तेरे सब वकील कर हील कूं टलैंगे ॥ ४ ॥ कहै नैनसुख–पलै मेट दुक्ख है यही मुख्य–मत रह विमुख्य तेरे हाड़ प्रमुख-सब खाक में रलैंगे ॥ ५ ॥

(१३३)

कहैं बार बार सतगुरु पुकार-सुनैं दयाधार-षट मत को सार करो दान चार-दोनों भौ मैं सुख पावो ॥ टेक ॥ यहां हो जश अपार म्हांहो जग उद्धार-टलै, पाप भार-फलै पुन्यडार-कुछ लेलोलार-खाली हाथों मत जावो ॥ १ ॥ दीजो रोग जान-औषधि को दान-जामैं गुण महान-औगुण जरान-शुभ खान पान-देथकान को मिटावै ॥ २ ॥ मूरख पिछान दीजो विद्यादान-जामें पापहानि-संपति की खान-देके स्वर्थज्ञान-परमारथ सिखायो ॥ ३ ॥ भयवान जान-शक्ति प्रधान-धनजन मकान-पट भाजनानि-देकै दान मांन समझावो भ्रम हटावो ॥ ४ ॥ लगै भूख प्यास-अति होय त्रास-नरपशु अनाश-आवे संत पास-कणमण गिरास-देकै शुद्ध जल प्यावो ॥ ५ ॥ इस भांति यार-दीजो दान चार-औषधि सुधार-विद्याउदार-सब भय निवार-कै अहार करवावो-कहै दास नैन-आनंद दैन-वोलो मिष्ट बैन-पावै सर्व चैन-सीखो जैन पेन-जासूं सूधे शिवजायो ।

(१३४)

कब जगैं भाग-करूं जगत त्याग-होके वीतराग-सेऊं धर्म आग-कब कर्म नाग-वन आग को बुझाओ ॥ टेक ॥ जामैं भर्म कांस-कुकरम की तांस-पापों की फांस-व्यसनों की धांस-उत्पत्ति नास-से निकास कब पांऊं ॥ १ ॥ जो मैं भोग भुंड-विषयन के झुंड-चौबीस कुंड-पचीस रुंड-कब अग्नि तुंड-दुर्ध्यान को भगाऊं जामैं धर्म फोल-अधरम की झोल-आकाश चौल पुद्गल के टोल-भरे काल भोल- क्या कलोल झांचलाऊं-३-आवे कब

मिलैं गुरु दयाल- टूटै मोह जाल-मेरा होनिहाल-कह अपना हाल-मस्तक जा झुकाऊं ॥ ४ ॥ हर अशुभ बृत्ति-करूं शुभप्रबृति-शुभ अशुभ कृत्ति-तजहो निम्रत्ति-कब निज परमातम को एकी भावभाऊं ॥५॥ दृग सुखकुबुद्ध-कियो अती विरुद्ध-दर्शन बिशुद्ध बिन रहो अशुद्ध-कब शुद्धप्रवृत्तिकर-शिवपदपांऊं-६-

१३५—जंगला ठुमरी ग़ज़ल

जनम विरथा न गंवावोजी-पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ-विर्थान-टेक—मतना मीत बिषयतरु बोवै-मत सूली चढ़ निर्भय सोवै-तज चारों पांचों सातों-मत पाप कमावो जी ॥१॥ त्रिषट प्रीवषट जीव चितारो-झटपट षट अरु पांच बिचारो-द्वादश-बाण चतुर शर धर तेरह मन ध्यावो जी ॥२॥ यही मोक्ष का मूल बतायो-अरिहंतादि महंतन गायो-कर प्रतीत बरतो सम्यक्त-सच्चे कहलावो जी ॥३॥ तज चौबीस अठाइस धारो-पाप पच्चीस छत्तीस संभारो-ले छयालीस-खपाआठों-सीधे शिवजावो जी ॥ ४ ॥ जो तैं। नाम नयन सुख पायो-तो तैं निजपर क्यों न लखायो-तज परमार्थ निज अर्थ गहो मत नाम लजावो जी ॥ ५ ॥

१३६—रागनी भैरवी-पूर्वी ठुमरी ।

देखो सुघड़ मधु बिंदु के कारण जग जीवन की मूढ़ दशा-टेक-भूले पंथ फिरैं भव कानन-जैसें कटक बिच व्याकुल शशा—१ भटकैं चहुँगतिके पथ में नित-लागी अगनि जामें चारों दिशा—२ लटकै भवतरु पकड़ कूप भ्रम-माखी परिजन खा तनसा—३ काटत स्याम स्वेत चूहे जड़-निश दिन आयुर्घसा घसा—४

नीचै नरक सरब मुख फाडत-भक्षा गत छल हंसा हंसा—५
सिर पर काल बली गज गुंजत-कहत सुगुरु हाथ पसा पसा—६
काढूं तोहि बिमान चढ़ाऊँ-पड़त बूंद मुख लागी चसा—७
भाषत नाक चढ़ाय मूढ़ हम-कैसे तजूं मुख आयो गसा—८
टूटी जड़ पाताल पधारे-नर्क कुंड में जाय धंसा—९
धिग् धिग् भूल मूल हम खोयो-सारस मैं तज फेर फंसा-१०
नैनानंद अंध जन दुख को-मानत सुख तन डसा डसा ११

१३७—रागनी जंगला झंझोटी का जिला।

समझ मेरे प्यारे जरा-अब तो समझ मेरे प्यारे जरा-
हे प्यारे ज़रा मतवारे ज़रा -टेक-

तुम त्रिभुवन मैं फिर आए-चौरासी में धक्के खाये - १
तैने स्वर्ग विमान सजाए-पशुगति में हले बहु ढाए—२
चढ़ तख्त निशान बजाये-पड़े नर्क र्शस छिदवाये—३
तूने सपरस सब करलीने-अरु पुद्गल सब चरलीने—४
तूने दुग्धामृत बहुपीये-पड़ कुगति मूत पीजीये—५
तूने सूंघे इतर हजारों-पड़ा नर्क सड़ा हर बारों—६
तैं तो जगत व्यवस्था निरखी-अपनी गत क्यूं ना परखी—७
तू तो नौ ग्रीवक लो सारे-गया नर्क अनंती बारे—८
किये ऊंच नीच सब काजा-भया पंडित मूरख राजा—९
रह्यो कौन काम तोहि बाकी-तुम आस करतहो बाकी-१०
तूने जो कुछ करी कमाई-सौ भी अपनी बतलाई-११
आए नंग धड़ंग उघारे-गये ख़ाली हाथ पसारे-१२
क्यूं पाप करै पर कारण-कर सम्यक दर्शन धारण-१३

तिहुँ काल अचल सुख पावो-तिहुँ लोकमें संत कहावो-१४
दृगसुख सब पाप गलैया-नहिं काल अनन्त रुलैया-१५

१३८—ठुमरी जंगला पूर्वी दादरा ।

कुछ ले चल भवोदधिपार—मंज़िल दूर पड़ी ॥ टेक ॥
थोड़ा सा दिन है अटक है भयानक-कर्मों के विकट पहाड़—१
दिन तो छिपैगा झुकैगी अंधेरी-दुख देगी लुटेरन की डार—२
लूटैंगे धन तेरा चूटैंगे तन-तुझे दैंगे नरक में डार—३
आश्रव रुकादे निराश्रव चुकादे-कोई रोके ना इस उस पार—४
मरज़ी पड़ै तो चुकादे भली विध-जैसा सुजन व्यवहार—५
मंदिर बनादे प्रभावनामैं देदै-साधू को देदे आहार—६
केवली प्रणीत जिन शासन लिखायदे-विद्याका करदे उद्धार—७
दुःखित को देदे खिलादे भुखित को-तीरथ पै करदे उपकार—८
तजदे कुबातों को सातों मैं देदे-सिर से पटक दे सारा भार—९
ग्रन्थ को बिसारोपधारो शिवपंथ को-नहिं त्यागोकोटोकैसरकार-१०
भाषै दृगानंद सदानंद पावो-आवो न जावो संसार-११

१३९—रागनी सारंग ।

वश कीजे-प्यारे वश कीजे-अरेहांरे गुमानी मन वश कीजे । हूै साधू उपधि तज सारी-जगत में जस लीजे ॥ टेक ॥ पाप करत गया काल अनंता-अब होजा ब्रह्मचारी-कमर दृढ़ कस-लीजे ॥ १ ॥ उदय विपाक सहा सब सुख दुख-जस अपजस सुखकारी-समाधी में धंस दीजे ॥ २ ॥ समता सुधा सिंधु में

घुसकर-हरो कलुषता खारी-निजआत्म रस पीजे ॥ ३ ॥ नैनानंद बंध सब टूटैं-कटैं व्याधि हत्यारी-मुक्ती में बस लीजे ॥ ४ ॥

१४०—राग बरवा पीलू खम्माचका दादारा वा कजरी रागनी पूर्वी।

मेरी करो करुणा परूं जी थारे पांव-मेरी ॥ टेक ॥ लीनी तोरी शरणाजी-तीनों मोरे हरणा-जनम जरा मरणा ॥ १ ॥ मोसो नहीं दुखियाजो-तोसो नहीं सुखिया-मैं मंगता तुम राव ॥ २ ॥ काढ़ो कारागृह सैं जी-उभारो भवद्रहसैं-कर्म महा गढ़ढाव ॥ ३ ॥ दीजो नैना सुख तुम-कीजो सारै दुख गुम-रखियोमत उरझाव ॥४॥

१४१—बरवा जंगला।

हे किस बन ढूंढूं आली-तज गये गुरु म्हारे संसार ॥ टेक ॥ होय बिरागी ममता त्यागी-त्यागो मिथ्याचार-जन धन त्याग भये ब्रह्मचारी तृष्णा दई है बिसार ॥ १ ॥ साज दयारथ ले सत-सारथ-सर्वपदारथडार-करपुरुषारथ-जय मदनारथ-पटक भपभ-वपार ॥ २ ॥ भज भवभारथ-हरिभर्मारथ-धर्मारथ लियोलार-गये-कर्मारथ-विजय हितारथ-परमारथ पथसार ॥ ३ ॥ किस पर्वत किस कंदर अंदर किस समशान मंझार-ढूंढूं किस चौपट किस को टर-कौन नदी किसपार ॥ ४ ॥ के पखालन-कैखक्षालन-कैपर्यंक पसार-जानै कहां तिष्टैं किस आसन जिन शासन अनुसार ॥ ५ ॥ मुनि अर्जिका श्रावक पेय्यल-दुर्लभ इस संसार जो कहूँ दृष्टि पड़ै तो बतादे-मानूंगी उपगार ॥ ६ ॥ त्रिविध भेष

गुण दोष नयन सुख-त्रिविध त्रिकाल निहार-करियो नवधा भक्ति भवि-कजन दीजे शुद्ध अहार ॥ ७ ॥

१४२ जंगला झंझोटी ।

करले कुछ अपना उपगार-मूढ-तू तो बहुत रुला जग जाल में-अज्ञानी अब ॥ टेक ॥ एक तो तजदे तू तीन मूढता-दूजे अष्ट महामदछार-तीजे शंकादिकमल आठों खोकर तू मन को धोडार ॥ १ ॥ चौथे तज दे तू षट अनायतन-दर्शन मोहनी तीन बिडार-चतु चारित्र मोहनि का मदहर-अवसर आवै हाथनयार ॥२॥ बसो अनादिनिगोद विषैशठ-काल लब्धि कर भयो निकार-नर नारक पशु स्वर्ग विषै किये पंचपरावर्तन बहुवार ॥ ३ ॥ चौदह लाख मनुष गति भरम्यो-पड्योलड़्यो मल मूत्र मंझार-बोल सकै अनहाल सकैनन ऊंधे मुख लटको हरबार ॥ ४ ॥ चारलाख परजाय नरक की-भुगती मिश्रकरम अनुसार-कुट कुटपिट पिट छिद छिद भिद भिद-कियो सागरां हा हा कार ॥ ५ ॥ भरमे बासठलाख पशुपु गति-नाना विधि किये मरण अपार । खिच खिच भिच भिच कुचल कुचल मर-स्वांस स्वांस मैं ठारहबार ॥६॥ चारलाख सुर योनि विडंब्यो-जहां सागरां सुख भंडार-झुर झुर मर मर रुल्यो जगत में-भोगे सुख ठाए बिपति पहाड़ ॥ ७ ॥ कहत नैनसुख सुन मेरे मनवा-अब तो तज निज दोष गंवार-आगम आप्त गुरू तत्वारथ-परखहोय जासे बेड़ापार ॥ ८ ॥

१४३–ठुमरी ।

मैं पूजे पंच कुमार-मिटी भव बंध अटक मेरी ॥ टेक ॥
जब वासु पूज्य भगवान मल्लि मैं करी याद तेरी-
भए नेमिपार्श्व महावीर प्रगट गई टूट मोह बेड़ी ॥ १ ॥
आयो तुम दर्बार करी प्रक्षाल तीन बेरी-
भई जन्म जरामरणादि भवांतप शीतल जिनमेरी ॥ २ ॥
चर्चत चंदन शांति भए प्रभु पंच पाप बैरी-
भई अक्षय ऋद्धि समृद्धि करी जब अक्षत की ढेरी ॥३॥
पुष्प हरैं कंदर्प क्षुधा-नैवेद्य ढाय गेरी-
दीपक चढ़ाय चरणारविंद मैं आंख खुली मेरी ॥ ४ ॥
अष्ट कर्म को वंश भयो विध्वंस धूप खेरी-
फलतैं अजरामर आश भई-शिव संपत अबनेड़ी॥ ५ ॥
अर्घ अनर्घ आरती आरति मेटी सब मेरी-
कहै नैन चैन मांगै मंगल भव भव सेवा तेरी ॥ ६ ॥

१४४—चाल तुलसा महारानी नमो नमो—

तुमही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो-हे महेश्वर हो परमेश्वर हो ॥टेक॥
निरावरण चिद्ब्रह्म स्वरूपी-तुम जित कर्म बलेश्वर हो ॥ १ ॥
तुम शंकर कल्यान के कर्त्ता-सुख भर्ता भूतेश्वर हो ॥ २ ॥
हर्ता हो सब कर्म कुलाचल-मृत्युं जय अमरेश्वर हो ॥ ३ ॥
निर्बंधन भव बंधन भेत्ता-नेत्ता-मुक्ति पथेश्वर हो ॥ ४ ॥
ध्यावैं सुर नर मुनिगण तुमको-तातैं आप गणेश्वर हो ॥ ५ ॥
पूजत पाप मताप मिटै सब-शांतिप्रद चंद्रेश्वर हो ॥ ६ ॥

इन्द्रादिक पद पंकज सेवैं-तासैं पूज्य पुजेश्वर हो ॥ ७ ॥
मेटो जन्म जरादि त्रिपुर दुख-तुम सच्चे मुक्तेश्वर हो ॥ ८ ॥
गृन्ह गृन्ह पर अज्ञ आस्ती-तुम दृग सुख प्रदेश्वर हो ॥ ९ ॥

१४५—देश की ठुमरी ।

जिनके हृदय सम्यक्त ना, करनी करै तो क्या करो ॥ टेक ॥
षट खंड को स्वामी भयो, ब्रह्मांड में नामी भयो ।
दिये दान चार प्रकार अरु, दिक्षा धरी तो क्या धरो ॥ १ ॥
तिल तुष परिग्रह तजि दिये, अति उग्र तप जप व्रत किये ।
पाली दया षट काय की, भिक्षा करी तो क्या करी ॥ २ ॥
करणों किया उपदेश को, छुटवा दिये दुर्भेष को ।
पहुँचा दिये बहु मुक्ति में, रक्षा करी तो क्या करी ॥ ३ ॥
आतम रहा बहिरात्मा, जाना अनातम आत्मा ।
परमात्म आतम नहिं लखा, शिक्षा करी तो क्या करी ॥ ४ ॥
गुरुमणिक रंड विषै कहैं, दृग सुख बिना शिव पद चहैं ।
बिन मूल तरु अनफूल फल, इच्छा करी तो क्या करी ॥ ५ ॥

१४६—रागनी धनाश्री ।

सकल जग जीव शिक्षा करयो ॥ टेक ॥ कृतकारित अपराध हमारे-सो सब पर हरियो । तजकर बैर प्रीति की परिणति-समता उर धरयो ॥ १ ॥ या भव जाल सदा फंस हम तुम-बहुते दुख भरियो-हाथ जोड़ अब दोष छिमाऊं आगे मत लड़यो ॥२॥ कीनो हम संवर तुम संवर, लै-कबहुँ न डरियो- नयनानंद पंथ संतन के चल भव जल तरयो ॥ ३ ॥

१४७—खम्माच रागनी झँझोटी ।

हमारो प्रभु नय्या उतार दीजै पार । टेक
अटक रही भव दधि के भँवर में, ऊरध मध्य अधो मँझधार ॥१॥
औघट घाट पड़ो टकरावै, चकित हरट घड़ी उनहार ॥२॥
अति व्याकुल आफुल चित साहिब, नाहो इधर नाहो उस पार ॥३॥
दल में रुद्ध शशाकी गति ज्यों, जित तित होत मार ही मार ॥४॥
अब चनीय मम दशा जिनेश्वर, कोई न शरण सहाय अधार ॥५॥
व्याकुल नैन चैन नहिं निश दिन, केवल तुमरो नाम अधार ॥६॥

१४८—भैरवी ।

जिस दिन सैं मैंने दरस तोरे पाये,
अनुभव घन बरसाए, दरश तोरे ॥ टेक ॥
भेद विज्ञान जगो घट अन्तर, सुख अंकुर रस रसाए ॥१॥
शीतल चित्त भयो जिम चन्दन, शिव मारग में धाए ॥२॥
प्रघटो सत्य स्वरूप परापर, मिथ्या भाव नशाए ॥३॥
नयनानन्द भयो अब मन थिर, जग में संत कहाए ॥४॥

१४९—रागनी जंगला-गंगाबासी देहाती ।

तुम्हें त्रिभुवन के जन ध्यावैं, थारे सुन सुन गुण भगवान । टेक ।
अजी अर्ह धातुसे भये हो अर्हन्, बोधलब्धि सें भयेहो भगवन ।
धरो अनन्त दरश सुख वीरज, किस मुख जस गावैं ॥ १ ॥
अजी आप तिरो ओरन को तारो, शुभ शिक्षाकर भरम निवारो ।
तारण तरण निरख सुर नर मुनि, चरण शरण आवैं ॥ २ ॥

[७३]

अजी षट २ की खटपट तज भविजन, सारभूत जिन चितमें धरमन
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, पुरुषारथ फल पावैं ॥ ३ ॥
अजी शूकरसिंह नवल कपि तारे, भील भुजङ्ग मतंग उधारे।
दग सुख के दग दोष हरो, थारे सेवक कहलावैं ॥ ४ ॥

[१५०]

मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरण हारे, अजी दोष धरन हारे सब टारे, निर्दोषी इक तुम ही निहारे, बीत राग सर्वज्ञ तरण तारण का विरद थारे ॥ टेक ॥
भूख प्यास तुमकूं नहीं दाता, राग द्वेष अरु नाहीं असाता।
जन्म मरण भय जरा न व्यापै, मद सब निर्वारे ॥ १ ॥
मोह खेद प्रस्वेद न आवै, विस्मय नींद न चिन्ता पावै।
भजगई रति अरु अरति कहैं, सुर नर मुनि जन सारे ॥ २ ॥
भूखा देव लिपटता डोलै, प्यासा नित सिर चढ़ चढ़ बोलै।
रागी छीन पराया धन दे, द्वेषी दे मारै ॥ ३ ॥
रोगी रोग सहित दुख पावै, जन्म धरै सो मर मर जावै।
डर कर बाँधै शस्त्र बुढ़ापा, सुध बुध हर डारै ॥ ४ ॥
मद वाला नित मदिरा पीवै, मोह मूर्छित मरा न जीवै।
स्वेद खेद विस्मय कर व्याकुल, किसको निस्तारै ॥ ५ ॥
सोवै सो परमादी होवै, डूबै अरु सेवग कु डबोवै।
खोवै आतम गुण सुतुम्हारे, गुण कैसे निर्धारै ॥ ६ ॥
चिन्तातुर को चिन्ता सोखै, रति बेहोश अरति से होकै।
भूत भवानी ऊत मसानी, तजदो सब प्यारे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं वोही, जिनने करम कालिमा धोई।
दगानन्द वोही देव हमारा, सेवो सब जन प्यारे ॥ ८ ॥

१५१—रागखानी।

राखो रुचि बीरा मत रूसो धरम से, राखो रुचि बीरा,
हे रूसो ना धरम से जिनमत के मरम सैं, राखो ॥ टेक ॥
धर्म प्रभाव तिरोगे भवसागर, पिण्ड छूटैगा तेरा आठोंही करमसैं १
साचेदेव धरम ही को सेवो, याहीसैं तिरोगे न तिरोगे जी भरमसैं २
मान नयनसुख सयानी, भावैं हैं सुगुरु तेरे जिया वेशरम सैं ॥३॥

१५२—रागनी भैरवी या खम्माच।

अबसैं चरन की शरण मैं लई प्रभु,
जागी सुमति मोरी भागी कुमति, प्रभु० ॥टेक॥
छूटी अदर्शन अविद्या अनादि, जब से समाधी चरन मैं लई। १
अनुभव भयो मेरे मन में तुमारो, अबसैं तेरी अप करन में लई। २
साताभई भगाई सब असाता, जो पूर्व जम्मन मरन मैं लई। ३
भजी सर्व चिंता भया सुख अनंता, दगानंद संपति भरनमें लई। ४

१५३—चाल।

मैं तो शान्ति पाई तृष्णा घटाने से ॥ टेक ॥
रागी मे पूजे विरागी मैं पूजे, भ्रष्ट भयो बहकाने से ॥ १ ॥
धार कुभेष अनेक भरे दुख, दूर भगो जिन बाने से ॥ २ ॥
मिटी कुदृष्टि सुदृष्टि भई अब, श्री जिन के समझाने से ॥ ३ ॥
बंध मोक्ष का मारग सूझा, स्वपर स्वरूप पिछाने से ॥ ४ ॥
जाने पुण्य पाप दोउ बन्धन, शुद्ध भावना भाने से ॥ ५ ॥
मैनानन्द भरे सब सुख दुख, सम्यक दर्शन पाने से ॥ ६ ॥

१५४–रागनी बरवा या धनासरी या पीलू ।

क्या नर देह धरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥ टेक ॥
तोलै ज़ोर गले पर मोसो, बोलै बात जरी, खोसै धन अरु नार
बिरानी पाप की पोट भरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥१॥
तृष्णा वश न कियो सठ संवर, दुर्गति बांध धरी ।
तिर कर सिन्धु किनारे डूबौ, यह क्या कुबुद्धि करी ॥ २ ॥
यह तो देह तपस्या कारण, काहू पुण्य धरी ।
तैं तप त्याग लाग विषियन में, राखो याहि सड़ी ॥ ३ ॥
बार अनन्त अनन्त जगत में, तैं सब देह धरी ।
क्या न कियो न कियो सो करले, परजा जात मरी ॥ ४ ॥
बहु आरम्भ परिग्रह में फँस, किसकी नाव तरी ।
हग सुख नाम काम अन्धन के, रे सठ खाक परी ॥ ५ ॥

१५५–खम्माच पीलू का दादरा ।

विकलपता सारी टरगई, विकलपता सारी,
हे जिनजी तुमरे ध्यान सैं ॥ टेक ॥
तुमरे सुगुण सुन सोधे मैंने निजगुण करम भरम रज झरगई ॥१॥
सिद्ध भये मेरे सकल मनोरथ, शुभ गति पायन परगई ॥ २ ॥
पूजत तुम पद डूबत भवदधि, टूटी नवका तिरगई ॥ ३ ॥
चहुँ गति सैं तिरआन भयोनर, उमर भजन में गिरगई ॥ ४ ॥
तिरत तिरत प्रभु थारे चरनन में, नाव हमारी अब अड़गई ॥५॥
जो न करोगे प्रभु पार हमारी नय्या, तौ अब आगे तरलई ॥६॥
नैन चैन प्रभु लोग कहैंगे, ऐसें बाड़ खेत कूं चरगई ॥ ७ ॥

१५६—राग भैरूनर ठुमरी।

थारे दर्शन सूं लौ लगी लगी, थारे अजी लगी लगी लौ
लगी लगी, पर परसन सूं लौ लगी लगी, थारे ॥ टेक ॥
परमारथ की प्राप्ति भई अब, तत्वारथ रुचि पगी पगी ॥ १ ॥
सुन सुन जिन धुन भर्म भग्यो सब, ज्ञान कला उर जगी जगी॥२
आई सुमति सुगति की दायनि, कुमति कुभागन भगी भगी ॥३॥
नयनानन्द भयो मन मेरे, कर्म प्रकृति सब दगी दगी ॥ ४ ॥

१५७—संध्या आरतो-चाल जै शिव ओंकारा।

जै श्री जिन देवा-जै जै जिन देवा-पार लगादो खेवा-करूं चरण सेवा ॥ टेक ॥ बंदूं श्री अरहंत परमगुरु, दया धरम धारी-प्रभु दया धरमधारी-परमातम पुरुषोत्तम-जग जन हितकारी ॥१॥ प्रभु भव जल पतित उधारण, चरण शरण थारी-प्रभु चरण-सद्वक्ता निर्लोभी, करम भरमहारी ॥ २ ॥ स्वामी तुम पद सेवत गज पति, भयो समता धारी-प्रभु भयो तीर्थंकर पद पारसपा, भयो भवपारी ॥ ३ ॥ आयो पिहिता श्रव मुनि मारन मृग पति बलधारी-प्रभु मृग पति-भयो बीरतीर्थंकर सुन शिक्षाधारी ॥४॥ स्वामी दोष कुशील धरो सीता प्रति दुर्जन अविचारी प्रभु दुर्जन-कूद पड़ी अग्नी में लेकै शरण थारी ॥ ५ ॥ खिल गए कँवल अगनी में प्रभु तुम मेटे भय भारी-प्रभु-अच्युतेंद्रपद दोनो फिरन होय नारी ॥ ६ ॥ बलि ने यज्ञ रचाय दुखी किये मुनि वर ब्रह्मचारी-विष्णुकुमार मुनीश्वर किये तुम उपगारी ॥७॥ पुष्पहार भए सर्प्प जिन्होंनै तुम सेवा धारी-प्रभु-विदित कथा सतियन की गावैं नरनारी ॥ ८ ॥ स्वामी वज्र किरण नृप मूरति

तुमरी कर मुद्राधारी-जीत्यो सिंहोदरसैं राम गरद भारी ॥ ९ ॥ स्वामी तिरगये नृप श्रीपाल भुजन तैं महा सिंधुखारी-कुष्ट व्याधिगई छिन मैं तुमही निर्वारी ॥ १० ॥ महा मंडलेश्वर पददे तुम कियो जगत पारी-वादिराय मुनिवर की हरीव्याधि सारी ॥११॥ मानतुंग मुनिवर के तोड़े राज बंध भारी-चढ़े सुदर्शन शूलीधरी मुकतिनारी ॥ १२ ॥ इत्यादिक भगवंत अनंती महिमा तुमधारी-तीनलोक त्रिभुवन मैं विदित कथा थारी ॥१३॥ शेष सुरेश नरेश मुनीश्वर जावैं बलिहारी-पावैं अखै अचलपद टरैं विपतसारी ॥१४॥ कहत नैन सुख आरति तुमरी करत हरन हारो-तारे जीव अनंते अबकै बार हमारी ॥१५॥

१५८—आरती।

जय जय जिनवानी नमो नमो-त्रिभवन जनमानी नमो नमो गण धरने बखानी नमो नमो-जय जय ॥ टेक ॥ वीत राग हिम गिरतैं उछरी-गणधर गुरुवों के घट मे पसरी-मोह महा चल दमो दमो जय ॥ १ ॥ जग जड़ता तप दूर करो सब-समतारस भरपूर करो अघ-ज्ञान विषैलरमोरमो ॥ २ ॥ सप्ततत्व षट दरब पदारथ-खो दिये ता बिन मैं ये अकारथ, अब मेरे उर जमो जमो ॥ ३ ॥ जब लग शिव फल होय न प्रापत, चहुँ गति भ्रमण न होय समापत तबलों यह कृषि थमो थमो ॥ ४ ॥ शूकर सिंह नवल कपितारे, चील भील अरु फील उभारे, त्यों मेरे अघ क्षमो क्षमो ॥ ५ ॥ जै जग ज्योति सरस्वती प्यारी, द्दग सुख आरति करै तुम्हारी, अरतिहरो सुख समो समो ॥ ६ ॥

१५६—रागनी झंझौटी ।

सारे जीवों की भय्या दया पालोरे, हंदया पालोरे अदया टालोरे-सारे ॥ टेक ॥ भय्या काया न खंडो न जिह्वा बिदारो-नासा मैं रस्से मती डालोरे ॥ १ ॥ भय्या आंखैं न फोड़ो न त्यौरी चढ़ावो, कैड़े बचन के न घाव घालोरे ॥ २ ॥ भय्या भोजन खिलादो पिलादो जी पानी-रोगी को औषध दे बैठालोरे ॥ ३ ॥ ज्ञानी बनादो अज्ञानी को बीरन, करकै अभय सब के भय टालोरे ॥ ४ ॥ भय्या पालोगे अज्ञा तो होगे नयन सुख सुनलो जिनेश्वर के मतवालोरे ॥ ५ ॥

(१६०)

अब तो चेतो पियरवा चेतन चतुरप्यारे, मेरो अनादी के भूल ॥ टेक ॥ हाथों सुमरनी कतरनी बगल मैं, ये तो कुमतिया ऐसी बनाई जैसी होवै रजाई मैं शूल, पियारे प्यारे जैसी होवै रजाई मैं शूल, अब तो-चेतो पियरवा चेतन ॥ १ ॥ धारो दया पर पीड़ा बिसारो, बोलो बचन सतवादी, रहोजी डारो चोरी के माथे मैं धूल ॥ २ ॥ मतना करो परनारी की बांछा लघुदीरघ नारी ऐसी गिनो जी जैसी माता बहन समतूल ॥ ३ ॥ त्यागो परिग्रह की तृष्णा नयन सुख, भावै सुमति मतराखै कुमति भाई बोवो न काटे बबूल ।

(१६१)

जनम मतखोवै-जनम मत खोवै अरे मतवारे ॥ टेक ॥
मत खोवै तू धरम रतन को, मत भवसिंधु डबोवै—१

कंचन भाजन धूर भरै मतरे, गज सज न्हात न होवै—२
मत चढ़ चक्र वरत हो खरपै अमृत से ना पग धोवै—३
मत चाटै असि सहत लपेटी, मत शूली चढ़ सोवै—४
मत मधुबिंदु विषय के कारण, मग में कांटे बोवै—५
श्री अरहंत पंथ में परले, ज्यों नयनानंद होवै—६

(१६२)

ले लेरे सरन सले श्री भगवान ॥ टेक ॥ खेलेरेतैं खेल घनेरे-लेरे पसान, सेले बांधे मेले कीये, पाप के समान ॥ १ ॥ छोली तैं छाती ले ले जीवन के प्राण, खोसेरेतैं परधन मोसे कंठ बेई-मान ॥ २ ॥ देलेरे अनारी अपने हाथों से तू दान, जावोगे अकेले जलावैंगे मसान ॥ ३ ॥ परलेरे तू दृग सुखदाई शिक्षा बुद्धिवान ले को न लेगा कोई, काया ये निदान ॥ ४ ॥

१६३ राग जंगला झंझौटी ।

अरे मन मान मेरी कही, तज पाप चेत सही, संसार में तेरो कौन है क्यों मूढ़ पक्ष गही ॥ टेक ॥ है परमब्रह्म तुही सर्वज्ञ ज्ञान मई, सम्यक बिन भया भ्रष्ट, तू चिरकाल विपति सही ॥१॥ स्वर्गादि विभव भई, तृष्णा तऊ न गई, तौ ओस सम नर भोगतैं यह आग जाय नहीं ॥ २ ॥ किन सीख तोहि दई, कर वमन फेर गही-मत खाय चतुप सुज्ञान यह बहुवार भोगलई ॥ ३ ॥ समझमीत यही, तजं भोग राख रहीं, कहै नैनसुख रहु विमुख नसै, सीख सुगुरु की कही ॥ ४ ॥

१६४—राग सपंदर खम्माच की धुन ।

तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे, लागी मतना डबोवो जी ॥ टेक ॥ हर कर्म भर्म धर परम धरम मिथ्यातकरम से हाथ उठा, चिरकाल जगत में दुःख भरे जिस भांति बने ले पिंड छुटा, भा भाव अनित्य अशर्ण सदा संसार हरट सा चलता है एकत्व दशा समझो अपनी वह तत्व क्यों नहिं टलता है तुम अशुचि अंग के संग शुद्धता अपनी ना खोवोजी ॥ १ ॥ है आश्रव बाट मैं संवर डाट प्रकाश महा वलकर्म खिपा, ये पुरुषाकार है कारागार तू कैद पड़ा है बाद सफा, है दुर्लभबोध ले सोध ज़रा जिन धर्म की प्रापति दुर्लभ है, ले तत्व अतत्व विचार हृदै इस वक्त तुझे सब सुलभ है, तैं पाई नर पर जाय अगामी मत कांटे बोवो जी ॥ २ ॥ ये भोग भुजंग भयानक हैं क्रोधादि अगन हा जलती हैं, तुम जलते हो न सिंभलते हो ऐ यार बड़ी यह गलती है, जो इनको त्याग बसैं बन मैं वे मुक्ति बरांगन वरतैं हैं निर्वाण अचल सुख पाते हैं, वे जन्म मरण, दुखहरते हैं, तू धरले सम्यक् दृष्टि नैन सुख जिन हित ओवोजी ॥ ३ ॥

इति शुभम्

भारतीय ज्ञानपीठ ग्रन्थागार, काशी

यह पुस्तक नम्बर ... तिथिको ... ली गई थी।
१५ दिनके अन्दर वापस आजानी चाहिये।